नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

तथागत हृदय

बहुजन हिताय
बहुजन सुखाय

लेखक–
भिक्षु धर्मरक्षित

Downloaded from http://dhamma.digital/

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

तथागत हृदय

लेखक—
त्रिपिटकाचार्य भिक्षु धर्मरक्षित

Dhamma.Digital

प्रकाशक—
भिक्षु धर्मज्योति

Downloaded from http://dhamma.digital/

प्रकाशक–
भिक्षु धर्मज्योति
दाई ज्यु क्यो
जापानी नव बुद्ध विहार
बुद्धगया, गया,
जि. विहार, भारत ।

बुद्ध सं. २५३१
वि. सं. २०४४
ने. सं. ११०८
ई. सं. १९८७

द्वितीय संस्करण १०००

मुद्रक–
नेपाल प्रेस,
शुक्रपथ, काठमाडौं ।
फोन– २२१०३२

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

दो शब्द

इस ग्रन्थ में तथागत के प्रति हमने अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलिमात्र अर्पित की है। आप यह न समझें कि हमने तथागत के हृदय को जानने का प्रयत्न किया है। जिन तथागत की स्तुति करने में ब्रह्मा लज्जित हो गये, वृहस्पति दुर्बल पड गये, सूर्य हतप्रभ हो गये और विष्णु ने भी मौन धारण कर लिया, उन लोकनाथ के हृदय को भला हम-जैसे मूढ क्या जान सकेंगे ?

'मानव-जीवन' के प्रधान सम्पादक 'श्री शेखर सिंह गौतम' के आग्रह और व्यवस्था से 'तथागत-हृदय' प्रकाशित हो रहा है। श्री वेदराज प्रसाद ने इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है इन दोनों श्रद्धालु उपासकों के हृदय में तथागत की भक्ति सदा बनी रहे और वे सद्धर्म की सेवा में अधिकाधिक योग दें, जन्म, जरा तथा मृत्यु से मुक्त होकर अमृत-तत्व को लाभ करें।

'भिक्षु धर्मरत्न' ने इस श्रद्धाञ्जलि का नाम "तथागत-हृदय" रखा है। वास्तव में 'तथागत-हृदय' बुद्ध-श्रद्धाञ्जलि ही है। हम इस सुन्दर नामकरण के लिए भाई धर्मरत्न जी के बडे कृतज्ञ हैं और आशा करते हैं कि उनका यह नामकरण

Downloaded from http://dhamma.digital/

सबको रुचिकर होगा तथा इसमें अर्पित श्रद्धाञ्जलि सभी प्राणियों के लिए मङ्गलकारी होगी।

भवतु सब्बमङ्गलं,
रक्खन्तु सब्बदेवता।
सब्बबुद्धानुभावेन,
सदा सोत्थि भवन्तु ते॥

आपका सब प्रकार से मङ्गल हो। सब देवता आपकी रक्षा करें। सभी बुद्धों के आनुभाव से सदा आपका कल्याण हो।

—भिक्षु धर्मरक्षित

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

पूर्व कथन

समय की गति के अनुसार मानव-जीवन का प्राकृततन शाश्वत धार्मिक धारा में अपने को निर्मल करता आया है। वह धारा हमें स्थान-स्थान पर विभिन्न रूपों में दिखाई पडा करती है। मानव सामाजिक प्राणी है और धर्म समाज की चेतना शक्ति है जो मानव को कर्त्तव्य की ओर अग्रसर होने में गतिमान करती है। धर्म की उन्हीं शक्तियों से मानव को अनुप्राणित करने वाले महापुरुष धर्म-प्रवर्तक कहलाते हैं, और उन्है उनके अनुयायी अथवा यों कहिये उनसे शक्ति-प्राप्त जन-समूह अपना अराध्य एवं ध्येयगेय समझता है— यही मात्र उसकी श्रद्धा है।

सृष्टि में सात्विक, राजसिक एवं तामसिक तीन प्रवृत्तियों का सम्मिश्रण हैं, देवता, मनुष्य तथा दानव ये तीन प्रतिमायें उसका प्रतिनिधित्व करती हैं। मनुष्य देवत्व की ओर आकृष्ट होने में अपना उद्धार मानता है। तामसी वृत्ति उसे पद–पद पर आवद्ध करके मार्गावरोध करती है, यही माया का स्वरूप कहलाती है। महापुरुषों एवं जनोद्धारक व्यक्तियों की उपदेश-वाणी जबतक मानव चेतना का गुञ्जरित करती रहती है और मानव जबतक उसकी प्रतिध्वनिसे स्वर

Downloaded from http://dhamma.digital/

मिलाये रहता है तबतक उसके जीवनका संतुलन बना रहता है, किन्तु धीरे धीरे वे उपदेशात्मक स्वर क्षीण पड जाते हैं और जनता के मानस–पटल पर अङ्कित वह धार्मिक रेखा धूमिल हो जाती है। निसर्ग ऐसे समय में उन्हे जाग्रत करने के लिए पुनः युग–स्रष्टाओं का अवतार करता है। भगवान् तथागत उन्हीं अवरित युग स्रष्टाओं में से हैं।

सनातन वैदिक धर्म के अनुप्राणक राम और कृष्ण के चरित्र से विश्व की मानवता कई युगतक अपना जीवनपथ प्रशस्त बनाती रही। मानव उनके आचरणों एवं उपदेशों के संकेत से देवत्व की ओर बढता रहा, किन्तु समय के एक सुदीर्घ सागर ने मानवता और देवत्व को एक दूसरे से वियुक्त करके अपने दोनों तटों पर खडा कर दिया। अब आवश्यकता इस बात की पडी कि कोई पारमार्थिक तत्व अवतरित होकर सेतुबन्ध करके मानवता दो देवत्व तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करता– भगवान् तथागत ने वही सेतुबन्ध किया।

मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम ने त्रेता युग में और पूर्ण-पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण ने द्वापर में अपने देवत्व विधान से तथा अपने आचार से जनता का उद्धार किया। उनके पश्चात् सनातन वैदिक धर्म की धारा में सात्विक प्रवृत्तियों पर तामसिक आवरण पुनः आते गये जिसके परिणाम स्वरूप मानवता हिंसात्मक तत्वों से संत्रस्त हो उठी और दैन्य, निरुत्साह एवं निरुद्यम से परितप्त हो गई। आडम्बर एवं

Downloaded from http://dhamma.digital/

पाखण्डने मानवीय भावना को वशीभूत कर लिया। जन जन का स्वान्तः सुख स्वप्न हो गया। मानव का कल्याणकारी धर्म–पथ ध्वान्त-ध्वस्त होकर विभिन्न अनाचारों में विलीन होने लगा— सम्भव था मानवता यदि उसी पथपर आचरण-शील रहती तो एक क्षण ऐसा आता कि महाप्रलय में आत्म-सात होकर अपना अस्तित्व ही खो बैठती। ठीक इसी समय भगवान् तथागत का अवतार हुआ।

व्यक्तित्व, आचरण, एवं वाङ्मय सम्मिलित रूप से ऐसे महाभाग महापुरुषों को प्रख्यात करते हैं। जनता उनके इन तीनों स्वरूपों में उनकी आत्म-ज्योति का दर्शन करती है, जिस से वह अपने को ज्योतित करने की कामना करती है। हम व्यक्तित्व से प्रभावित होते हैं, आचरण से परिपूत होते हैं और और वाङ्मय से अनुप्राणित होते हैं।

आज भूमण्डल का महाखण्ड एशिया भगवान् तथागत गौतम के आदर्श व्यक्तित्वका आराधक है उनके आचरणका अनुकारी है और उनके वाङ्मय का परम-प्रियालु-श्रोता बना है। आधुनिक युगमें दैन्य दुःखिता मानवता को परित्राण देने में भगवान् तथागत ने अपने उक्त (व्यक्तित्व आचरण, वाङ्-मय) तीनों स्वरूपों से शक्तिशाली बनाया है— एतदर्थ विश्व मानवता उनके प्रति कृतज्ञ होकर उनके श्री चरणों में अपनी श्रद्धा अर्पित करती है। मानव को उसके सम्मुख केवल ज्ञानोपदेश देना ही तथागत का व्रत नहीं था; उसका आदर्श उपस्थित करना भी उनका लक्ष्य था––कहा है––

Downloaded from http://dhamma.digital/

परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
स्वीय कर्ममनुष्ठानं बुद्धदेवेन दर्शितम् ।।

ऐसे लोकोपकारी भगवान् तथागत के जीवन से ही नहीं उनके हृदय से भी परिचित कराने का सत्प्रयास त्रिपिटकाचार्य श्रद्धेय भिक्षु धर्मरक्षित जी ने मानवता के कल्याण के ही लिये किया है। प्रस्तुत ग्रन्थिका में सम्मानित लेखक ने तथागत के व्यक्तित्व, आचरण एवं वाङ्मय तीनों स्वरूपों पर पर्य्याप्त (किन्तु संक्षिप्त) प्रकाश डाला है। हम मानव-सेवक-साहित्य-मण्डल की ओर से उनके इस प्रसाद के लिए आभारी हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तिका अपने लघु संस्करण से ही अपार जनता के सहृदय से सम्पर्क बढाने में सहयोगी होगी।

रामरक्षा त्रिपाठी 'निर्भीक'
एम० ए०, ए० टी० सी०
शास्त्री, साहित्यरत्न

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

अन्तरङ्ग सूची

		पृष्ठ
१	महाकारुणिक तथागत	१
२	तथागत की दिनचर्य्या	११
३	तथागत का ईर्यापथ	१८
४	तथागत का शान्त विहार	२५
५	तथागतकी धर्म-विजय	३२
६	तथागतका धर्म-राज्य	४४
७	तथागत की पूजा	५२

Downloaded from http://dhamma.digital/

Downloaded from http://dhamma.digital/

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

१

महाकारुणिक तथागत

भगवान् बुद्धका सम्पूर्ण जीवन दया, करुणा, मैत्री, प्रेम, अहिंसा, बन्धुत्व, समदृष्टि एवं समतासे परिपूर्ण था। यदि उनके जीवनकी प्रत्येक घटनाका इस दृष्टिसे विचार किया जाय, तो उसकी एक भी शृंखला इसके विपरीत जाती न मिलेगी। तथागतकी करुणा अथाह थी। क्या निर्धन, क्या धनी, क्या मूर्ख, क्या विद्वान् उसके प्रवाहमें कौन नहीं बहा ? उन्होंने करुणा से द्रवित होकर रोगियोंकी सेवा की, क्षुधार्तोंको भोजन दिया, मार्ग-भूलोंको सन्मार्ग दिखाया, दुखियोंका दुःख दूर किया, संग्रामके लिए उद्यत व्यक्तियोंको शान्त किया, सैकडों मील पैदल चल कर तृषितोंकी प्यास बुझायी। क्या वे कभी गाडीसे चले ? क्या उनके पास कोई सवारी थी ? नहीं; उन महाकारुणिकने हम आर्त-प्राणियों पर दया कर, हमारे ही हितके लिए सदा पैदल यात्रा की। कैसे थे वे प्रभु, जिन्होंने कष्ट उठायर हमें सुखी बनानेका सदा प्रयत्न किया !

उन महाकारुणिकका लुम्बिनीके पावन–वनमें जब वैशाखी पूर्णिमाको जन्महुआ, तब उसी समय उन्हें हम पर

Downloaded from http://dhamma.digital/

दया आ गई। वे तथागत वैसे ही तो आए थे, जैसे दूसरे बुद्ध। अतः उनमें दया हो तो क्यों नहीं ? "मैं मुक्त हो, मुक्त करूँगा" के शब्दोच्चारके साथ ही उनकी करुणा प्रवाहित हो गई।

वह वैशाखी पूर्णिमा भी कम महत्वकी न थी, जिस दिन उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर संसारसे निराश प्राणियोंको आशा दिलाते हुए कहा था— "अमृतका द्वार तुम्हारे लिए खुला है, जिनके कान है, वे श्रद्धा पूर्वक सुनें।"

वे महावैद्य थे। उन्होंने रोगी मानवके रोगको शान्त करनेके लिए चरण बढाया, सन्तप्त प्राणियोंको शीतलता प्रदान की, अशांतवातावरणको शान्त किया और तृषित-मानवके लिए धर्मामृतकी वर्षा की। कैसे उनके भाव और कैसा था सुखकर उनका दर्शन ! जो उनके पास आते, वे तृप्त हो बोल उठते— "श्रमण ! तुम्हारी छाया सुखकर है ! तथागत ! तुम्हारी शरण कल्याणकर है ! लोकनाथ ! तुम्हारे गुण अनन्त हैं ! भगवान् ! तुम अनन्त ज्ञानी और सर्वज्ञ हो !"

तथागत दुःखी एवं पीडित प्राणियोंके उद्धारके लिए महा करुणाके साथ संसारको देखते थे। जब वे संसारको रागाग्नि, मोहाग्नि और द्वेषाग्निसे जलते देखते, तब उनसे रहा नहीं जाता और वे उसे बचानेका प्रयत्न करने लगते। उनके लिए सभी प्राणी समान थे। उनकी करुणाकी धारा सब

Downloaded from http://dhamma.digital/

पर समान रूपसे प्रवाहित होती थी। उन्होंने अंगुलिमाल जैसे शस्त्रधारी डाकूपर भी अपने मैत्री-बलसे विजय प्राप्त करली। सन्तति-शोकमें निमग्ना पटाचाराके पश्चातापको उन्होंने शान्त कर दिया।

और देखिये उन महाकारुणिककी लीलाको, रोहिणी नदीके किनारे पानीके लिए उठे युद्धको उन्होंने शीघ्र जाकर शान्त किया। कोशल नरेशके पुत्र विडूडभने सिंहासनारूढ होनेपर शाक्योंसे उनके कुकर्मोंका बदला लेना चाहा। उसने तैयारीके साथ उनपर आक्रमण कर दिया। जब उन करुणावरतारकी दृष्टि इसपर पडी, तब उन्होंने धूप–गर्मीका ख्याल न किया। वे विडूडभके मार्गमें एक छाया विरहित वृक्षके नीचे पहलेसे ही जा बैठे और उसके आनेपर उपदेश देकर उसे लौटा दिया। उनके जीते–जी मगध–नरेश अजातशत्रुने भी लिच्छवियोंपर चढाई नहीं की। सब प्राणियोंपर उनकी कैसी अनन्त करुणा थी!

तथागतका ध्यान सदा गरीबोंपर बना रहता था। वे क्षुधित, तृषित एवं पीडितोंकी सेवाके लिए नित्य तत्पर रहते थे। एक दिन प्रातः काल जब वे सारे संसारपर करुणादृष्टि डालकर देख रहे थे, तब उनका ध्यान एक ऐसे दरिद्रकी ओर गया, जिसका कोई सहायक न था। वे प्रातः काल ही कुछ भिक्षुओंको साथ लेकर उधर चलदिए। तथागतको उस गांवमें आया देख, दरिद्र यह सोचकर बहुत प्रसन्न हुआ कि भगवान्–

Downloaded from http://dhamma.digital/

का उपदेश सुननेको मिलेगा, किन्तु उसी दिन उसका एक बैल जंगलमें खो गया। उसने सोचा कि यदि बैलको अभी नहीं खोज लाता हूँ तो फिर नहीं मिलेगा। अतः वह जंगलमें बैल खोजने चला गया। इधर गांव वालोंने समयपर भगवान् और भिक्षु-संघको भोजन कराया तथा उपदेश सुननेके लिए चारो ओरसे घेर कर बैठ गए। उन करुणावतारने सोचा कि जिसके लिए मैं आया, वही नहीं है अतः जबतक वह नहीं आता है, तब तक उपदेश नहीं करूँगा।"

उधर खोजते-खोजते उसका बैल कहीं दोपहर में मिला। बैलको घर लाकर खूँटेमें बाँध देनेके बाद वह दौडा-भागा भगवान् के पास आया। उसने सोचा कि उपदेश तो अब समाप्त हो चुका ही होगा, लेकिन कमसे कम वहाँ पहुँच कर श्री चरणोंमें प्रणाम तो कर लूँ। जब वह भगवान्के पास पहुँचा, उस समय भूखके मारे उसके ओंठ सूख गए थे। चेहरा कुम्हला गया था। भगवान्ने उसकी मुखाकृति देखकर उसकी भूखका अनुभव किया और पूछा— "भिक्षु संघके कुछ भोजन बचा है ?"

"हां भन्ते !"

"तो इस भूखेको भोजन दो।"

जब वह खा चुका, उसका मन शान्त हो गया, तब भगवानने उपदेश किया। उसी उपदेशको सुन वह अर्हत् हो गया। भगवान्ने उसी दिन भिक्षुओंको उपदेश किया— "भूख

Downloaded from http://dhamma.digital/

सबसे बडा रोग है।"

उन करुणा-निधानकी रोगियोंके प्रति दया देखिये। तिस्स नामक एक भिक्षुके शरीरमें छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलीं, जो बढती गई। अन्ततोगत्वा उसके सारे शरीरमें बडे बडे घाव हो गए और उनमेंसे दुर्गन्ध निकलने लगी। भिक्षु उसकी सेवा करनेसे दूर भागने लगे। वह बिछावन पर पडा अकेले कराह रहा था। उसके सारे शरीरमें घावोंसे बहे पीवसे चीवर चिपक गए थे। परमकारुणिक तथागतकी जब उस पर दृष्टि पडी, तब उनके हृदयमें असीम करुणा उत्पन्न हुई। उन्होंने देखा कि उनका अपना ही तिस्स मरनेके लिए छोड दिया गया है। वे गन्धकुटीसे निकले, पानी गर्म करने वाले बिहारमें गए। उन्होंने पानी गर्म कराया, और तिस्सको नहलानेके लिए उठाने लगे। भिक्षुओं ने जब यह देखा तो चारो ओरसे भगवान्‌को घेर लिया और उसे नहलानेके लिए प्रार्थना की। किन्तु उन करुणामूर्तिने तिस्सके सभी कपडे गर्म पानीमें धुल-वाकर धूपमें डलवा दिए और स्वयं पानी गिरा गिरा कर तिस्सको उसी प्रकार नहलाया, जिस प्रकार माँ अपने इकलौते पुत्रको नहलाती है।

जब तिस्स वेदना कम होने पर शान्त और प्रसन्न बदन हो चारपाई पर लेटा तब भगवान् ने कहा– "भिक्षुओ! तुम्हारे माता-पिता नहीं है जो तुम्हारी सेवा करेंगे। यदि तुम परस्पर एक दूसरेकी सेवा नहीं करोगे, तो कौन करेगा? जो

Downloaded from http://dhamma.digital/

रोगीकी सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है।"

उन करुणा-मूर्तिने जहाँ अजातशत्रु जैसे पितृघातकको शरण दी, वहाँ अम्बपाली, विमला, अड्ढीकाशी आदि गणिकाओं का भी उद्धार किया। अपने शिष्योंके प्रति भी उनकी दृष्टि सदा वैसेही रही। राजगृहमें विहार करते समय महापन्थने अपने मूढप्रज्ञ भाई चूलपन्थको विहारसे घर चले जानेको कहा और उसके लिए आएहुए जीवकके निमंत्रणको भी अस्वीकार कर दिया। यद्यपि चूलपन्थ घर जाना नहीं चाहता था, वह चीवर छोडकर गृहस्थ बनना नहीं पसन्द करता था, फिर भी अपने बडे भाईसे इस व्यवहारके पश्चात् वह घर जानेके लिए बाध्य हुआ। उसने सोचा—"दिनमें बिहारसे घर जानेमें हँसी होगी, सब लोग देखेंगे, कौनसा मुँह लेकर घर जाऊँगा! अतः बडे तडके अँधेरेमें उठ चला जाऊँगा, उस समय सम्भव है कि कोई न देखे।"

उन करुणावतारने भोरके समय जब अपने करुणा-जालको फैलाया, तो उसमें चूलपन्थको पाया। उसके हृदयकी भावनाओंको जान, उन्हें महाकरुणा हो आयी। वे चूलपन्थके जानेसे पूर्वही बिहारके द्वारपर जाकर टहलने लगे। जब चूल-पन्थ घर जानेके लिए निकला और द्वारपर पहुँचा, तब उन्होंने पूछा, "कौन है?"

"भन्ते! मैं हूँ चूलपन्थ।"

"इतने भिनसारे कहाँ जा रहा है!"

Downloaded from http://dhamma.digital/

भन्ते ! मैं गृहस्थ होकर रहने के लिए घर जा रहा हूँ।"

"ऐसा क्यों भिक्षु ?"

यह सुनते ही चूलपन्थका कंठ अवरुद्ध हो गया। उसने किसी प्रकार सारा वृत्तान्त कह सुनाया। तथागतने अपने कोमल हाथोंसे उसके सिरको सहलाते हुए कहा– "भिक्षु ! तू मेरे पास प्रव्रजित हुआ है। मैं तो तुझे जानेको नहीं कहता।"

तथागतने उसे प्रेम पूर्वक गन्धकुटीमें लाकर भावना विधि बतलाई और अर्हत्व प्राप्त करा दिया। वह चूल–पन्थ महाऋद्धिमान् भिक्षु बन गया। यह थी तथागतकी अपार करुणा !

श्रावस्तीमें अकाल पडा था। दूसरे मतावलम्बी साधारण साधु पेट भर भोजन न मिलनेपर जेतवनमें भगवान्के पास आये। भगवान् ने सबके लिए भोजन का प्रबन्ध किया।

नालन्दाके उपालि सेठके बौद्ध हो जाने पर तथागतने कहा कि वह जैन साधुओंको पूर्ववत् ही भोजन दिया करे।

वे सब जगह जाते थे। सब धर्मावलम्बियोंको समान दृष्टिसे देखते थे। जब दूसरे धर्मावलम्बी उन्हें गाली देते थे तो वे उनके प्रति अप्रसन्न न होकर मैत्री ही करते थे।

एक बार भगवान् बुद्ध राजगृहसे नालन्दा जारहे थे। उनके पीछे पीछे सुप्रिय परिव्राजक अपने शिष्य ब्रह्मदत्तके साथ

Downloaded from http://dhamma.digital/

भगवान्‌की अनेक प्रकारसे निन्दा करता हुआ चल रहा था। भिक्षुओंने यह बात भगवान्‌से कहा। उस पर उन करुणावतारने कहा– "भिक्षुओं! यदि कोई मेरी, धर्मकी या संघकी निन्दा करे, तो तुमलोगोंको उस वैर, असंतोष पर चित्तमें कोप नहीं करना चाहिए, यदि कोई मेरी, धर्मकी या संघकी प्रशंसा करे, तो तुम्हें उससे आनन्दित, प्रसन्न, और हर्षोत्फुल्ल भी नहीं होना चाहिए। यदि तुम निन्दाप्रशंसा सुन-कर दुःख-सुखका अनुभव करोगे, तो उसमें तुम्हारी ही हानि है।"

तथागतको गालियोंका भी दान मिलता था और वे बडे प्रेमसे उसे अस्वीकार करदेते थे। एक समय खोटामुँह ब्राह्मण भगवान् के पास आया और उन्हें गाली देने लगा। तब भगवान्‌ने मुस्कराते हुए पूछा— 'ब्राह्मण! क्या कभी तुम्हारे यहाँ अतिथि या रिश्तेदार आते हैं?"

'हां, श्रमण! कभी कभी आते हैं।'

'क्या तुम उनके लिए खाने पीनेकी चीजें तैयार करते हो?'

'हाँ, तैयार करता हुँ।'

'तो क्या वे सब खा जाते हैं या कुछ बचता भी है?'"

'सब नहीं खा जाते, कुछ बचता भी है।'

'बचा हुआ अंश किसे मिलता है?'

'मुझे।'

Downloaded from http://dhamma.digital/

'ब्राह्मण ! उसी प्रकार कभी गाली न देने वाले मुझको जो तुम गाली दे रहे हो, उसे मैं स्वीकार नहीं करता। तुम्हारी गाली तुझे ही स्वीकार हो। तुम्हारे दिएहुएका मैं उपयोग नहीं करता, ब्राह्मण ! ये बातें तुम्हींको मिल रही हैं।'

यह सुनकर खोटामुँह ब्राह्मण पानी-पानी हो गया और भगवान्‌की शरणमें आकर अपना जीवन सफल किया।

तथागतके करुण-प्रवाहका थाह नहीं। वह अथाह और अनन्त था, जिससे सुनक्खत्त लिच्छवी जैसे अप्रसन्न रहने वाले व्यक्तिभी उनकी प्रशंसा करते थे। देवदत्त जैसा विरोधी भी अन्तमें इस प्रकार उनका गुण-गान करताहुआ शरणमें आया—

इमेहि अट्ठीहि तमग्गपुग्गलं,
देवातिदेवं नरदम्म-सारथिं।
समन्तचक्खुं सतपुञ्ञलक्खणं,
पाणेहि बुद्धं शरणं गतोस्मि ॥

हे संसारके सर्वश्रेष्ठ पुरुष ! देवताओंके भी उत्तम देवता मनुष्योंको दमन करने वाले सारथी स्वरूप ! सभी दिशाओंमें सब कुछ देखने वाले ! सैकडों पूण्य-लक्षणोंसे युक्त! भगवान् बुद्ध ! मैं अपने शरीरको इन सम्पूर्ण हड्डियों तथा प्राणके साथ आपकी शरणमें गया हुआ मानव हूँ।

Downloaded from http://dhamma.digital/

उन करुणा-निधानके करुणा-प्रवाहमें बहनेका जिन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ वे कितने कृत-पुण्य थे ! हमारे लिए तो उन करुणा वतार तथागतकी पुण्य-स्मृतियाँ एवं उनके निर्मल उपदेश ही तो अवशेष हैं । किन्तु प्रसन्नताकी बात है कि उन महाकारुणिकने अपने जीवनकी अन्तिम वैशाखी पूर्णिमाको कुशीनगरके जोडे शाल-वृक्षोंके नीचे लेटे सान्त्वना देते हुए कहा था— "आनन्द ! मैंने जो धर्म और विनयका उपदेश किया है, मेरे बाद वही तुम्हारा शास्ता है।"

उन अनन्त कारुणिक तथागतको बार बार प्रणाम् ।

★★

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

२

तथागत की दिनचर्या

भगवान् बुद्धके आचरण एवं व्यक्तित्वको समझनेके लिए उनकी दिनचर्या जानना आत्यावश्यक है। व्यक्तिकी दिनचर्या उसके आचरण एवं व्यक्तित्व दोनोंको प्रकट करती है। हम तथागतकी दिनचर्याको इस दुष्टिकोण से देखेंगे, जिससे उन्हें समझने में किसी प्रकारकी कठिनाई न हो।

साधारण रूपसे तथागत की दिनचर्या पांच भागोंमें विभक्तकी जाती है— १. भोजनके पूर्वकी चर्या २. भोजनके बादकी चर्या ३. पहले पहरकी चर्या ४. बिचले पहरकी चर्या और ५. पिछले पहरकी चर्या। भगवान् बुद्ध प्रातः ही उठकर मुख धोना आदि नित्यकर्म कर भिक्षाटनके समय तक एकान्त स्थानमें रह, अन्तरवासक पहन, काय-बन्धन बाँध चीवर ओढ, पात्र ले कभी अकेले ही और कभी भिक्षु–संघसे घिरे हुए गाँव या कस्बेमें भिक्षाके लिए प्रवेश करते थे। वे गाँवके पास पहुँच कर संघाटीको भली प्रकार ओढते थे, भिक्षु–संघभी भलीप्रकार संघाटी ओढ कर तैयार हो जाता था, तब भगवान् गाँवमें प्रवेश करते थे। गाँवमें जानेपर भगवान्को देखकर

Downloaded from http://dhamma.digital/

कभी कभी लोग प्रार्थना करते थे— "भन्ते ! हमें दस भिक्षु दें, हमें बीस भिक्षु दें," और भगवान्के पात्रको ले सुन्दर बिछे हुए आसन पर बैठाकर सत्कार पूर्वक भोजन कराते थे। भगवान् भोजन कर हाथ धो उन्हें योग्यतानुसार धर्मोपदेशदेते थे। कभी कभी विशेष बात आजानेपर या किसी भिक्षुके गुणकोप्रकाशित करनेके बिचारसे स्वयं उपदेश न देकर उस भिक्षुको ही उपदेश देनेके लिए आज्ञा करते थे। उपदेशके समाप्त होनेपर वे भिक्षु संघके साथ अपने विहार करनेके स्थानको लौट जाते थे। कभी–कभी भगवान् गांवमें जाकर घरकी परिपाटीसे भिक्षाटन कर पाये हुए भोजन को ले, एकान्त स्थानमें जाकर भोजन करते थे। भोजनोपरान्त लौट कर बिहारमें चले आते थे। कभी कभी ही किसी विशेष बातके आजानेपर वे भिक्षाटन करने न जाकर बिहारमें ही रहते थे। एक बार भगवान् मथुराके गुन्दाबनके विहारमें वास कर रहे थे। भोजनके समय भगवान् भिक्षु-संघके साथ भिक्षाटनके लिए नगरकीओर चले। भगवान् ज्योंही नगरके समीप पहुँचे एक यक्षिणी नंगी हो सामने आ खडी हुई। भगवान् भिक्षु–संघके साथ वहींसे लौट आए। मथुरा वासी गृहस्थोंने जब इस समाचारको सुना तब कन्होंने विहारमें ही भोजन पहुँचानेका प्रबन्ध किया।

ऐसेही एक बार भगवान् श्रावस्तीके जेतवन विहारमें वास करते थे। नगरमें होलीका उत्सव (बाल-नक्षत्र) मनाया

Downloaded from http://dhamma.digital/

जा रहा था। गँवार लोग गालियाँ देते घूम रहे थे। उस समय भी भगवान् एक सप्ताह तक भिक्षुसंघके साथ भिक्षाटन करने नहीं गये। भोजनकी व्यवस्था विहारमें ही हुई।

जब कभी कोई दायक भगवान्को भिक्षु-संघके साथ भोजन के लिये निमन्त्रित करता था तब वे भिक्षु-संघके साथ उस दायकके घर जा भोजन कर धर्मोपदेश देकर लौटते थे। जब कभी भगवान् भिक्षु संघके साथ नगरमें भिक्षाटनके लिए जाते थे, आगे आगे भगवान् चलते थे और उनके पीछे-पीछे क्रमशः भिक्षु-संघ। जब पांच सौ भिक्षुओंकी पंक्ति नगरमें प्रवेश करती, तो कितनी भली जान पडती! लोग इस शान्त, दान्त भिक्षु-मण्डली एवं भगवान्को देखकर चकित हो जाते। कभी-कभी भिक्षाटनसे पूर्व अन्य साधु–परिव्राजकोंके आश्रमों-में जाकर कुछ वार्तालाप करते थे और समय हो जाने पर भिक्षाके लिए नगरमें प्रवेश करते थे। वहांसे लौटकर भगवान् विहारके मण्डपमें बुद्धासनपर बैठते थे। जब कभी भिक्षु भोजन कृत्यसे निवृत्त हो जाते थे, तब भगवान्के उपस्थाक आकर निवेदन करते थे–– "भन्ते! सभी भिक्षु भोजन कर चुके?" तदुपरान्त तथागत गन्धकुटीमें प्रवेश करते थे। इसे तथागतकी भोजनके पूर्वकी चर्या कहते हैं।

इस प्रकार भगवान् भोजनके पूर्वके कृत्यको समाप्त कर गन्धकुटीके बरामदेमें बैठकर पैरोंको धो भिक्षु–संघको उपदेशदेते थे–– "भिक्षुओ अप्रमादके साथ जीवनके लक्ष्यका

Downloaded from http://dhamma.digital/

सम्पादन करो। संसारमें बुद्धका उत्पन्न होना दुर्लभ है, मनुष्य-का जन्म पाना कठिन है, सुअवसरका प्राप्त होना मुश्किल है, प्रव्रजित होना दुर्लभ है और धर्म-श्रवण करना दुर्लभतर है।" तब कोई-कोई भगवान्‌से कर्मस्थान (योग-विधि) पूछते थे। भगवान् उनकी चर्याके अनुरूप कर्मस्थान बतलाते थे। तत्प-श्चात् सभी भगवान् को प्रणाम कर अपने अपने रात्रि एवं दिनमें विहार करने के स्थानमें चले जाते थे। कोई अरण्य, कोई वृक्षके नीचे, कोई पर्वत आदिमेंसे किसी एक जगह। तदुपरान्त भगवान् गन्धकुटीके भीतर जा यदि इच्छा होती तो मुहूर्त भर दाहिनी करवटसे स्मृति एवं सम्प्रजन्यके साथ सिंहशय्या से लेटते थे। विश्रामसे उठ महाकारुणिक दृष्टिसे संसारको देखते थे। भगवान् जिस गाँव या कस्बेके पास विहारकरते थे, वहाँके लोग भगवान् एवं भिक्षु-संघको दोपहरसे पूर्व दानदे भोजनोपरान्त भली प्रकार पहन ओढ कर गन्ध, पुष्प आदि ले विहारमें एकत्र होते थे। तब भगवान् गन्धकुटीसे निकलकर परिषदमें जा, बिछे बुद्धासन पर बैठ परिषदके योग्य स्थान एवं कालको देखते हुए धर्मोपदेश देते थे। समयानुसार भगवान् परिषद्‌को विदा करते थे। लोग भगवान्‌को अभिवादन कर चले जाते थे। इसे तथागतकी भोजनके बादकी चर्या कहते हैं।

भगवान् भोजनोपरान्तके कृत्यको समाप्तकर यदि स्नान करना चाहते तो बुद्धासनसे उठ स्नान-घरमें प्रवेश कर उपस्थापक भिक्षु द्वारा प्रस्तुत किये जलसे स्नान करते। उप-

Downloaded from http://dhamma.digital/

स्थापक भी भगवान्‌के आसनको लाकर गन्धकुटीके परिवेण (आँगन) में बिछा देते। तथागत लाल रंगका अन्तरवासक पहन, कायबन्धन (कमरबन्द) बाँध उत्तरासंघ (ओढनेका चीवर) को एकांश कर वहाँ आ, मुहूर्त भर अकेले ही चुपचाप बैठते थे। तब भिक्षु धीरे धीरे चारों ओरसे आकर भगवान्‌के पास एकत्र होते थे। उनमेंसे कोई प्रश्न पूछता, कोई कर्म–स्थान और कोई धर्मोपदेशके लिये प्रार्थना करता। सुगत उनकी इच्छाओंको पूर्ण करते हुए पहले पहरको बिता देते थे। इसे तथागतकी पहले पहरकी चर्या कहते हैं।

पहले पहरके व्यतीत होनेपर जब भिक्षु भगवान्‌को अभिवादन कर चले जाते, तब सम्पूर्ण दसहजार चक्रवालोंके देवता अवसरपर भगवान्‌के पास आकर प्रश्न पूछते थे। शास्ता उनके प्रश्नोत्तर देते हुए ही बिचले पहरको बिता देते थे। इसे तथागतकी बिचले पहरकी चर्या कहते हैं।

पिछले पहरको भगवान् तीन भागोंमें बाँट, पहले भागको चंक्रमण करते हुए बिताते थे। दूसरे भागमें गन्धकुटी-में प्रवेश कर स्मृति और सम्प्रजन्यके साथ दाहिनी करवट से सिंहशय्यासे लेटते थे। तीसरे भागमें उठकर बैठ, पहलेके बुद्धके शासन-कालमें दान शील आदि पुण्य कर्मोंको किये हुए व्यक्तियोंको देखनेके लिए महाकरुणा–समापत्तिको प्राप्त कर बुद्ध-चक्षुसे संसारको देखते थे। इसे तथागतकी पिछले पहरकी चर्या कहते हैं।

Downloaded from http://dhamma.digital/

यह तथागतकी साधारण दिनचर्या है। काल, स्थान एवं प्रयोजन–विशेषके अनुसार इस दिनचर्यामें अल्पमात्र ही अन्तर होता था, वह भी वर्षावासके तीन मास तथा किसी बिहारमें कुछ दिन ठहरनेके अतिरिक्त चारिका आदि समयोंमें ही। शास्ता जब किसी दूरस्थ व्यक्तिपर अनुकम्पा कर ऋद्धि-बलसे वहां जानेके लिए 'त्वरित चारिका' करते थे और जब ग्राम, निगम और नगरसे होते भिक्षाटन करते, धर्मोपदेश देते 'अ-त्वरित चारिका' करते थे, तभी इन चर्याओंमें अल्पमात्र अन्तर पडता था। तथागत कभी-कभी अपने सामने भूखों को भोजन दिलवाते थे, रोगियोंकी सेवा करते थे, कई योजन जाकर छाया रहित वृक्षके नीचे बैठकर जगदोद्धारका चिन्तन करते थे। कभी-कभी सारी रात खुले मैदानमें ही बैठ ध्यान सुखमें बिता देते थे। कभी ऐसाभी होता था कि वे दोपहरके बाद दूसरे परिव्राजकोंके आश्रममें जाकर धार्मिक वार्तालाप भी करते थे। कितनी बार भगवान्‌को खाली-पात्र ही लौट आना पडा था।

इस प्रकार हमने देखा कि तथागतकी दिनचर्या अत्यन्त परिशुद्ध एवं अनुपम थी। तथागत की दिनचर्यासे संसारके किसी भी महापुरुषकी दिनचर्याकी तुलना नहीं की जा सकती। क्या संसारके किसी भी कोनेमें कभी ऐसे महापुरुषका जन्म हुआ है। जिसकी दिनचर्या नियमित एवं सदा क्रमबद्ध रही हो और जो स्वयं मुक्त हो संसारको मुक्त करनेके प्रयत्नमें

Downloaded from http://dhamma.digital/

ही अपना सम्पूर्ण जीवन बिता दिया हो !

"विसुद्धचरितो सत्था बुद्धचरियाय पारगू ।
सुब्ब चरियासु कुसलो लोकाचरियो अनुत्तरो ।।"

उन लोकोत्तर चर्यावाले तथागतको नमस्कार ।

□□

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

३

तथागतका ईर्यापथ

शशारीरिक अवस्थाओंको ईर्यापथ कहते हैं। चलना, बैठना सोना और खडा होना— ये चार शारीरिक अवस्थायें हैं। इन्हें ही पालिसाहित्यमें 'चतुइरियापथ' (चार ईर्यापथ) कहा जाता है। साधारणत: किसी व्यक्तिके ईर्यापथसे तात्पर्य उसकी रहन सहन और चाल–ढालसे है। हम यहाँ तथागतके, ईर्यापथका इसी दृष्टिसे वर्णन करेंगे।

भगवान् बुद्धकी सम्पूर्ण शारीरिक अवस्थायें शान्त, संयत, सौम्य एवं प्रशस्त थीं। उठना, बैठना, चलना, फिरना आदि सभी ईर्यापथ नियमित, संतुलित तथा समयोचित थे। तथागतके आदर्श ईर्यापथको देख सभी आश्चर्यमें पड जाते, सबको उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो आती और उनका अनुगमन करने के लिए स्वत: प्रेरणा प्राप्त होती। जिन्होंने उन महा-प्रभुके दर्शन किये, जिन्हें उनके सामने बैठकर उपदेश सुननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और जो उन सम्यक्-सम्बुद्धके ईर्यापथको देख श्रद्धा प्राप्त कर सका, उनका जीवन सफल था। शास्ता के ईर्यापथको सुनने मात्रसे भी लोगोंका हृदय श्रद्धावनत हो

Downloaded from http://dhamma.digital/

जाता।

तथागतके ईर्यापथ एवं धर्मोपदेशकी चारों ओर चर्चा थी। जहाँ–जहाँ तथागत गये, सर्वत्र लोगोंके मुँहसे यही निकला–– "वे भगवान् अवश्य ही अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध हैं।" जिस दिशामें शास्ता होते, उस दिशाकी ओर हाथ जोडकर लोग प्रणाम् करते–– "उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धको नमस्कार।" भक्तजनों की कैसी अचल श्रद्धा थी उस लोक-गुरुके प्रति। वक्कलि जैसे भिक्षुओंको तथागतके ईर्यापथ एवं रूप–शोभाको देखते हुए समय व्यतीत करना जीवन साफाल्य-सा ज्ञात होता था।

तथागतके अनुत्तर ईर्यापथको सुन और जानकर ही अशोक कालीन वैतुल्यवादियोंका कहना था कि शास्ताका जन्म मर्त्यलोककी इस धरतीपर नहीं हुआ था, वे तुषित–भवन नामक स्वर्गमें उत्पन्न हुए थे और वहीं रहकर उन्होंने उपदेश भी दिया था, किन्तु जो तथागत मनुष्य लोकमें उत्पन्न होकर मानवीय सभी परिस्थितियोंका अनुभव करके सर्वज्ञताको प्राप्त कर हमारे शास्ता (मार्गोपदेष्टा) तथा लोकगुरु बने, उन तथागतके ईर्यापथको स्वर्गीय कहकर उनके महत्वको घटाना है। वे भगवान् बुद्ध मनुष्य थे और इसी मर्त्यलोकमें उत्पन्न होकर बुद्धत्व प्राप्त किया था, अतः उनका ईर्यापथ मानवीय था। वे न तो देव थे, न ब्रह्मा, न सुर या असुर। उन्होंने मानव शरीरधारी होते हुए मानव–

Downloaded from http://dhamma.digital/

जीवनके कष्टोंको दूर करनेका सदा मानव–समाजमें ही रह-कर प्रयत्न किया। वे शास्ता अरण्यमें बिहार करते श्मशान, वृक्षमूल और शून्य गारमें भी रहते। अकेलेभी बिचरण करते और भिक्षुओंके महासंघके साथ घिरे हुए भी। वे सुगत (बुद्ध) भिक्षाके लिए गांवोंमें जाते, गृहस्थोंके घर पधारते और धर्मोपदेश कर शान्त-भावसे बिहार लौटते।

भगवान् बुद्धके ईर्यापथका शब्द–चित्र आजभी त्रिपि-टकमें उपलब्ध हैं। हम उसे देखकर तथागतके ईर्यापथका अनुमान कर सकते हैं। मज्झिम–निकायके ब्रह्मायुसुत्तमें तथागतके ईर्यापथका अत्याधिक सुस्पष्ट वर्णन आया है। उससे हम जान सकते हैं कि तथागतका दैनिक जीवन एवं ईर्यापथ कैसा सुव्यवस्थित, नियमित एवं संयत था। मिथिलावासी ब्रह्मायु ब्राह्मणके भगवान्के ईर्यापथको यथार्थरूपसे जाननेके लिए अपने चतुर शिष्य उत्तर मानवकको तथागतके पास भेजा था। उत्तर माणवक शास्ताके पास जा ईर्यापथको देखते हुए छः मास तक साथ न छोडने वाली छाया की भाँति उनके पीछे पीछे फिरता रहा। उसने भगवान्को चलते भी देखा, खडे भी देखा, घरोंमें जाते भी देखा, घरोंमें जाकर चुपचाप बैठेभी देखा, भोजनके बाद उपदेश देते हुएभी देखा, बिहारके भीतर चुपचाप बैठेभी देखा और बिहारके प्रांगणमें धर्मामृतकी वर्षा करते हुए भी देखा। वह एक सच्चे परीक्षककी भाँति भग-वान्के ईर्यापथको भली प्रकार देखकर सातवें महीने मिथिला

Downloaded from http://dhamma.digital/

लौटा। उसने गुरुके पास जाकर प्रणाम किया और तथागतके ईर्यापथको बतलाते हुए कहा :—

"गुरुवर! वे भगवान् सम्यक सम्बुद्ध वैसे ही हैं, बल्कि उससे भी अधिक हैं। वे भगवान् बत्तीस महापुरुष लक्षणोंसे युक्त हैं। वे भगवान् चलते सयम पहले दाहिना ही पैर उठाते हैं, वे न बहुत दूसरे पैर उठाते हैं, न बहुत समीप रखते हैं। वे न बहुत जल्दी–जल्दी चलते हैं, न बहुत धीरे धीरे। चलते समय उनके घुटने परस्पर नहीं रगडते और न तो गुल्फ ही। वे न ऊपर की ओर देखते हैं, न नीचेकी ओर, और न चारों ओर देखते चलते हैं। वे चार हाथ मार्ग देखते हैं, उससे आगे उनकी खुली–ज्ञान दृष्टि होती है।

"वे गृहस्थोंके घरके भीतर शरीरको उपर नहीं उठाते, न नीचे झुकाते हैं। वे न आसनसे दूर और न अति समीप शरीरको पलटते हैं। न हाथका अवलम्बन लेकर आसनपर बैठते हैं, न आसनपर शरीरको फेंकते हैं। वे घरमें न हाथकी चंचलता दिखाते हैं, न पैरकी। न घुटनेपर घुटना रखकर बैठते हैं, न गुल्फको गुल्फपर चढाकर और न हाथको ठुड्डीपर रखकर ही बैटते हैं। वे घरमें बैठे हुए न स्तब्ध होतें हैं न काँपते हैं, न चंचलताको प्राप्त होते हैं।"

"वे पात्रसे जल लेते समय न पात्रको ऊपर उठाते हैं, न पात्रको नवाते हैं। वे भोजन न बहुत अधिक और न बहुत कम ग्रहण करते हैं। शास्ता साग–सब्जीको मात्राके अनुसार

Downloaded from http://dhamma.digital/

ग्रहण करते हैं। दो तीन बार करके वे मुखमें ग्रासको चबाकर खाते हैं। भोजन करते समय भात का जूठन अलग होकर उनके शरीरपर नहीं गिरता। वे भातका जूठन मुँहमें बचे रहने पर दूसरा ग्रास मुँहमें नहीं डालते। रसको जानते हुए ही वे आहार ग्रहण करते हैं, किन्तु रसमें राग नहीं करते। वे आठ बातोंका ध्यान रखते हुए आहार ग्रहण करते हैं — न चपलताके लिए, न मदके लिये, न मंडनके लिए, न विभूषणके लिए, जितना आहार इस कायाकी स्थिति और यापनके लिए, भूखकी पीडाकी शान्तिके लिये, ब्रह्मचर्यकी सहायताके लिए आवश्यक है, उतना ही ग्रहण करते हैं। इस प्रकार आहारकी सहायतासे पुरानी वेदनाको हटायेंगे, नई वेदनाको उत्पन्न न होने देंगे, मेरी शरीर–यात्राभी होगी, निर्दोष और सरल विहारभी होगा।

"भोजनोपरान्त वे जल ग्रहण करते समय न पात्रको उठाते हैं, न झुकाते हैं। वे जल मात्रासे ग्रहण करते हैं। पात्रको बुल–बुल करते धोते नहीं, न उलटते हुए पात्रको धोते हैं और न तो पात्रको भूमिपर फेंक कर हाथ धोते हैं। उनके हाथ धोते समय पात्र धुल जाता है और पात्र धोते समय हाथ। वे पात्रके जलको न बहुत दूर फेंकते हैं, न बहुत समीप, और र घुमाते हुए। वे भोजन कर चुकने पर पात्रको भूमि पर नहीं फेंकते और न बहुत समीप या दूर ही रखते हैं। वे न पात्र से बेपरवाह होते हैं, न सर्वदा उसकी रक्षामेंही तत्पर रहते हैं।

Downloaded from http://dhamma.digital/

भोजनके बाद वह थोडी देर चुपचाप बैठते हैं और भोजनका अनुमोदन करते हैं, उसकी निन्दा नहीं करते। वे वहाँ उपस्थित परिषद्को धार्मिक कथा द्वारा प्रसन्न कर आसनसे उठ कर चले जाते हैं।

"वे न बहुत जल्दी-जल्दी चलते हैं और न बहुत धीरे-धीरे। न छूटनेकी इच्छाके समान चलते हैं। उनके शरीरमें चीवर न बहुत ऊपर रहता है, न बहुत नीचे, न शरीरमें बहुत सटा, न शरीरसे बहुत निकला हुआ। उनके शरीरसे हवा चीवरको उडाती उनके शरीरमें मैलभी नहीं लगती।

"विहारमें जाकर वे बिछे आसनपर बैठते हैं। बैठ कर पैर धोते हैं। वे पाद-मंडनमें तत्पर हो नहीं विहरते। वे पैर धोकर, शरीरको सीधा रख, होशको सामने रखकर बैठते हैं। वे न आत्मपीडाके लिये सोचते हैं, न पर-पीडाके लिए, न किसीकी पीडाके लिए। वे आत्म-हित पर-हित, उभय-हित और लोक-हित का चिन्तन करते ही आसीन रहते हैं।

"भगवान् विहारके भीतर परिषद्में धर्मोपदेश करते हैं। उनका शब्द परिषद्से बाहर नहीं जाता, वे सन्तुलित शब्दों में ही उपदेश देते हैं। उनकी वाणी मधुर एवं हृदय-स्पर्शिणी होती है।"

उत्तरमाणवकने तथागतके ईर्यापथका वर्णन करते हुए

Downloaded from http://dhamma.digital/

अन्त में कहा– "वे भगवान् इससे भी बढ कर हैं।" सचमुच ही तथागत उत्तरमाणवकके शब्द–चित्रसे बढ कर थे। उस अनुत्तर शास्ताका चित्र भला एक सांसारिक व्यक्ति क्या खींच सकता ?

उन अनुपम ईर्यापथ वाले तथागतको नमस्कार।

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/

४

तथागतका शान्त विहार

भगवान् बुद्ध शान्त विहारके बडे प्रशंसक थे। वे स्वयं शान्त विहारसे विहरते थे तथा भिक्षुओंको भी उसकी ही शिक्षा देते थे। भगवान् बुद्धके जीवनकी यह सबसे बडी विचित्र घटना थी कि उनके जीवनका प्रायः अधिकांश भाग अरण्य आदि शान्त स्थानोंमें ही व्यतीत हुआ।

पुरुषोत्तम सिद्धार्थ गौतमका जन्म लुम्बिनीके पावन उद्यानमें एक शालवृक्षके नीचे हुआ था। महातपस्वी सिद्धार्थने उरुवेला–जंगलके बोधि–वृक्ष (पीपल) के नीचे परम ज्ञानको प्राप्त किया था, और भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्धने कुसीनाराके शालवनमें जोडे शालवृक्षोंके नीचे ही परिनिर्वाणको भी प्राप्त किया था। यह कैसी थी उनके जीवनकी अद्भुत घटनायें, जो तीनो वृक्षोंके नीचे ही घटीं!

तथागत जंगलोमें रहना अधिक पसन्द करते थे। वे दो बातोंको देखते हुए अरण्यका सेवन करते थे– "(१) इसी शरीरमें अपने सुख–विहारके ख्यालसे और (२) आने वाली जनतापर अनुकम्पाके लिए, जिससे वह उनका अनुगमन कर

Downloaded from http://dhamma.digital/

सुफलभागी हो !" वे भिक्षाटनसे लौट कर भोजन कर प्रायः जंगलमें चले जाते थे और जंगलके पत्ते, तृण आदिको एकत्र कर उसपर बैठ दिवा विहार करते थे ।

बुद्धकालीन विहारों (मठों) की स्थितिपर यदि ध्यान दिया जाय, तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि भगवान् बुद्ध जहाँ–जहाँ रहते थे, वे सभी स्थान नगर और बस्तीसे दूर प्रायः वन या उद्यानमें थे । जेतवन श्रावस्तीसे एक मील दक्षिण–पश्चिम अन्धवनके पास था इसिपत्तन मिगदाय (सारनाथ) वाराणसी-से काफी दूर उत्तर एक वाटिकामें था । वेणुवन राजगृहसे दूर पहाडियोंके पास राजोद्यानमें था । कूटागार महाशाला वैशालीसे दूर महावनमें थी । पावाका विहार नगरसे दूर आम्रवनमें था । कुसीनाराका विहार राजधानीसे दूर शाल–वनमें था । कपिलवस्तुका निग्रोधाराम नगरसे दूर वन्य प्रदेशमें था । कोशाम्बीके घोसिताराम तथा कुक्कुटाराम नगरसे दूर यमुनाके किनारे वाली वाटिकामें थे । भर्ग–देशका विहार सुंसुमारगिरि भेसकलावन मृगदायमें था । चम्पाका विहार गग्गरा पुष्करणीके किनारे था । इस प्रकार हम देखते हैं कि कोईभी विहार ऐसा न था जो नगरसे दूर न रहा हो ।

भगवान् बुद्ध केवल अकेले वृक्षके नीचे विहार करते थे । उन्होंने उकट्ठाके सुभगवनमें शालराजके नीचे दिवा विहार किया था, जब मागन्दीय ब्राह्मणने देख कर अपनी पुत्रीके लिए उन्हें अनुकूल वर समझा था । प्राचीन वंश मृगदायके

Downloaded from http://dhamma.digital/

शाल–वृक्षके नीचे उन्होंने वर्षावास किया था, उरुवेलाके अजपाल निग्रोध (वरगद) और बोधि–वृक्षके नीचे विहार किया था। इस प्रकार तथागतके शान्त-विहारकी गणना नहीं।

भगवान् तथा भिक्षु–संघका शान्त विहार कैसा था ? इसका अनुमान इस घटनासे किया जा सकता है– मगध-नरेश अजातशत्रु अपने पिता विम्बिसारको जेलमें रखकर भूखों मार डाला। पिताकी मृत्युके पश्चात् उसे बडा सन्ताप हुआ। उसने जीवकके साथ भगवान्के पास जाना चाहा। उस समय तथागत राजगृहमें जीवकके आम्रवनमें साढे बारह सौ महा-भिक्षु संघके साथ विहार कर रहे थे। अजातशत्रुने जीवकसे कहा– "सौम्य जीवक ! हाथियोंकी सवारी तैयार कराओ।" जीवकने हाथियोंको सजवा कर राजाको सूचना दी– "देव ! सवारीके लिए हाथी तैयार हैं।"

तब अजातशत्रु पाँच सौ हाथियों पर अपनी रानियोंको बैठा कर स्वयं राजहाथी पर सवार हो मशालों की रोशनीके साथ राजगृहसे बडे राजकीय ठाट–बाट से निकला और जहाँ जीवक का आम्रवन था, वहाँ गया। आम्रवनके पास पहुँचने-पर अजातशत्रुको भय, घबराहट और रोमांच होने लगा। अजातशत्रु डर कर बोला— "सौम्य जीवक ! कहीं तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हो ? तुम मुझे दगा तो नहीं दे रहे हो ? कहीं तुम मुझे शत्रुओंके हाथ तो नहीं दे रहे हो ? बारह

Downloaded from http://dhamma.digital/

सौ पचास भिक्षुओंके बडे संघके यहाँ रहने पर भी भला कैसे थूकने-खाँसने तकका या किसी दूसरे प्रकारका शब्द न होगा ?"

"महाराज ! मत डरें, आपको मैं धोखा नहीं दे रहा-हूँ, न आपको दगा दे रहा हूँ, न आपको शत्रुओंके हाथ दे रहा हूँ, आगे चलें महाराज ! आगे चलें, यह मण्डपमें दीये जल रहे हैं।"

भगवान् बुद्ध इतने शान्तिप्रिय थे कि जहाँपर वह रहते थे, जराभी शब्द नहीं होता था। जब कभी शब्द होता था, तब या तो स्वयं दूर हट जाते थे या भिक्षुओंको दूर कर देते थे। ऐसी अनेक घटनाएँ उनके जीवनमें मिलती हैं। हम देखते हैं कि एक बार सारिपुत्र और मौद्गल्यायनके साथ रहने वाले भिक्षुओंने शोर किया। बस, तथागतने उन्हें वहाँसे चले जानेको कहा। इसी प्रकार पाँच सौ भिक्षुओंके साथ यशोज स्थविरको भी।

दूसरे लोग राज-कथा, चोर-कथा आदि निरर्थक बातों में लगे रहते थे, किन्तु तथागतको यह पसन्द नहीं था। वे भिक्षुओंको सिखाते थे- "भिक्षुओ। श्रद्धा पूर्वक घरसे बेघर हो प्रव्रजित हुए तुम कुलपुत्रोंके लिए यह अनुचित है कि निरर्थक चर्चामें पडो। भिक्षुओ ! इकट्ठे होकर तुम्हें दो ही कार्य करना चाहिए (१) धार्मिक कथा या (२) उत्तम मौनभाव।" तथागत शोर गुलको एकान्तवासका बाधक समझते

Downloaded from http://dhamma.digital/

थे। इसीलिए उन्होंने खडाऊँ पहनना तक मना कर दिया था, क्योंकि खडाऊँसे खट् खट्के शब्द होने से शान्त बिहारमें बाधा पडती थी। जब कभी ऊँचे शब्द होते थे, तब तथागत उसकी उपमा "केवटोंके मछली मारनेके शब्द" से देते थे। तथागत कहा करते थे।— "भिक्षुओं! आर्य–विनयमें गीत रोना है, नाच पागलपन है, दाँत दिखा दिखा कर बडी देर तक हँसना लडकपन है। इस लिए भिक्षुओ। गीत, नाच और हँसीको बिल्कुल ही त्याग दो। तुम्हें धार्मिक प्रमोदके लिए मुस्कारा लेना भर काफी है।"

तथागतका शान्ति-विहार बडा प्रसिद्ध था। जब कभी वे दूसरे मत वाले परिव्राजकोंके आश्रममें जाते थे, तब वे तथागतको देखते ही चुप हो जाते थे और अपने शिष्योंको भी चुप करते हुए कहते थे– "आप सब चुप रहें, मत शब्द करें। श्रमण गौतम आ रहे हैं। वह आयुष्मान् निःशब्द प्रेमी तथा निःशब्दके प्रशंसक हैं। परिषद्को निःशब्द देख सम्भव है इधर आएँ।"

तथागतके गृहस्थ शिष्यभी शान्त-पसन्द थे। एक बार राजगृहका सन्धान-गृहपति निग्रोध परिव्राजकके मठमें गया। वह अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ व्यर्थकी गप्पमें लगा था। तीन हजारकी उसकी शिष्य-मण्डली थी। उसने सन्धान गृह-पतिको दूरसेही आते देखा। देखकर अपनी शिष्य-मण्डलीको शान्त करते हुए कहा— "आप लोग चुप हो जाँय, हल्ला न

Downloaded from http://dhamma.digital/

मचावें। यह श्रमण गौतम का श्रावक सन्धान गृहपति आ रहा है। श्रमण गौतमके जितने उजले वस्त्र पहनने वाले गृहस्थ श्रावक राजगृहमें रहते हैं, उनमें वहभी एक है। ये आयुष्मान् निःशब्द चाहने वाले हैं, निःशब्दमें विनीत हैं, निःशब्दकी प्रशंसा करने वाले हैं। ये निःशब्द मण्डलीमेंही जाना अच्छा समझते हैं।"

शान्त–विहारके प्रशंसक तथागतने अपने जीवनमें शान्त विहारके हेतु शून्यागार, वृक्षमूल, अरण्य, गिरिगुहा, बनप्रस्थ, नदी-तीर आदि एकान्त स्थानोंमें प्रायः विहार किया है। तथागत तथा भिक्षुओंके शान्त और एकान्त बिहारको देखकर देवताओं को भी स्पृहा होती थी। एक बार एक देव-पुत्रने भगवान्के पास आकर पूछा—

"अरण्यमें विहार करने वाले ब्रह्मचारियोंका जो एकाहारी हैं, किससे वर्ण निखरता है?"

तथागतने उत्तर दिया—

"बीतेकी चिन्ता नहीं करते, भविष्यकी चर्चाभी नहीं करते। केवल वर्त्तमानसे निर्वाह करते हैं, उसीसे उनका वर्ण निखरता है।"

भगवान्ने अरण्य एवं एकान्तवासकी प्रशंसा करते हुए कहा था—

"जो शून्यघरोंका सेवन करता है वह आत्म–संयमी मुनि श्रेष्ठ है। भिक्षुको चाहिय कि सारे बन्धनोंको त्याग कर

Downloaded from http://dhamma.digital/

वैसे अनुकूल अरण्य, शून्य-घर और वृक्ष-मूलमें विहार करे।"

उन्होंने यह भी कहा था--

"रमणीय वन, जहाँ साधारण-जन रमन नहीं करते, वहाँ काम-भोगोंके पीछे न भटकने वाले वीतराग रमण करेंगे।"

तथागतने अन्तमें अनुकम्पा पूर्वक कहा था--

"भिक्षुओ। मत प्रमाद करो। पीछे पश्चाताप न करना। यह तुम्हारे लिए हमारे अनुशासन हैं।"

अहा! तथागतकी हमपर कितनी कृपा थी। उन्होंने हमारी ही भलाईके लिए सदा शान्त-विहार किया। उन करुणावतारने हमारे लिए कितना कष्ट उठाया?

उस शान्त-विहारी तथागतको शत-शत प्रणाम् है।

★★

Downloaded from http://dhamma.digital/

५

तथागतकी धर्म विजय

भगवान् बुद्धने बोधि–वृक्षके नीचे बैठकर जिस ज्ञानामृतको प्राप्त किया, उसे उन्होंने संसारके सभी प्राणियोंको पिलानेके लिए पैंतालिस वर्ष तक पैदल भ्रमण किया। सुख, विलासमें पलेहुए तथागतने कष्टोंकी परवाह न की। उन्हें कभी भिक्षाटनके लिए गाँवोंमें जाकर खाली पात्र लिएहुए लौटना पडा, वेरंजामें अकाल पडनेपर तीन मास तक शिला-पर पीसे हुए अन्न-मात्रको खाकर रहना पडा, कभी लोगोंकी फटकार सुननी पडी, चिंचा और सुन्दरी जैसी दुष्ट स्त्रियोंके मिथ्या-प्रसंगों द्वारा उस निष्कलंकको कलंकित करनेका प्रयत्न किया गया, देवदत्त जैसे दुष्टोंने उन्हें मारने का भी दुष्प्रयास किया, कभी कुछ लोगों ने भ्रूणहत्याका अपराधी (भूनहुनी) भी कहा, किन्तु उन लोकगुरु भगवान् बुद्धने अपना मार्ग नहीं बदला। वे अपने मार्गपर दृढता पूर्वक चलते ही रहे। सभी परिस्थितियोंमें उनकी विजय हुई। वे अद्‌भुत धर्म–विजय करके प्राणिमात्रका कल्याण करनेमें सदा तत्परही रहे। तथागतने जो कुछ किया "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

सब सुन्दर और प्रशस्त, सब कल्याणकर तथा मुक्तिदायक ! हम यहाँ उनके कुछ उन विशेष गुणोंपर प्रकाश डालेंगे, जिनसे उन्होंने अनुत्तर धर्म-विजय की ।

निःस्वार्थ लोकचर्या

भगवान् बुद्धने संसारके दुःखित प्राणियोंकी निःस्वार्थ सेवा की । उन्हें किसी प्रकारके लाभ, यश, कीर्ति एवं सम्मानकी कामना न थी । वे अपने शिष्योंकी संख्या बढानेकी भी चिन्तामें न थे और न तो वे गण-शास्ता (महन्त) ही बनना चाहते थे : वे अपने शिष्योंको भी उपदेश देते थे—"भिक्षुओ ! लाभ, सत्कार और प्रशंसा दारुण हैं, उनमें नहीं फँसना चाहिये, तुम्हें उन्हें त्याग देनेका अभ्यास करना चाहिये ।" तथागतने मुक्त होकरभी अरण्यका सेवन किया । धूप, गर्मी, जाडा, बरसातका ध्यान नहीं किया । पैदल तथा ऋद्धिबलसे जहाँ आवश्यकता पडी, यात्रा की । सब स्वार्थ-रहित हो, जीव मात्रके कल्याणका ध्यान रखा ।

वे मागन्दीय ब्राह्मण तथा उसकी पत्नीके उद्धारके लिये कुरु जनपदकी एक झाडीमें बैठे, कोलिय तथा शाक्योंके रक्तपातको रोकनेके लिये रोहिनी नदीके बीच खडे हुए । शाक्योंकी रक्षाके लिए एक छाया-रहित वृक्षके नीचे विराजमान हुए और भिक्षुओंको सांसारिक आसक्तिसे हटानेके लिए सिरिमा गणिकाके सडे हुए मृत शरीरकी तीन दिनों तक रखवाली कराई । तथागतका सारा जीवनही निःस्वार्थ-लोक-

Downloaded from http://dhamma.digital/

चर्यामें व्यतीत हुआ। उनकी निःस्वार्थ–लोकचर्या कहाँ तक गिनाई जाय ? शास्ताही एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सदा बहुजनका हित–सुख निःस्वार्थ–भावसे किया— "सारिपुत्र ! जो ठीकसे कहते हुए यह कहेगा कि सम्मोह धर्मसे रहित एक व्यक्ति बहुजनके हित–सुखके लिये उत्पन्न हुआ है, तो वह मेरे ही लिये कहेगा।"

यथावादी तथाकारी

तथागतने केवल उपदेश मात्रही नहीं दिया, उन्होंने जिन गुण-धर्मों का उपदेश दिया, स्वयं उनका आचरण भी किया और जिनका आचरण किया, उन्हींका उपदेश भी दिया। इसीसे वे यथावादी तथाकारी एवं यथाकारी तथावादी हुए। परसेवा बौधर्मका एक पवित्र उद्देश्य है। भगवान् बुद्धने स्वयं परसेवा की और परसेवाका उपदेश दिया। उन्होंने मुक्त होकरही भिक्षुओंको मुक्ति-पथ बतलाया और उनकेभी मुक्तहो जानेपर ही परहितार्थ प्रेरित करते हुए कहा– "भिक्षुओं ! मैं सभी दिव्य और मानुषी बन्धनोंसे मुक्त हूँ और तुम लोग भी दिव्य और मानुषी सभी बन्धनोंसे मुक्त हो। भिक्षुओ ! बहुजनके हितके लिये, बहुजनके सुखके लिये, लोकपर दया करनेके लिये, देवताओं और मनुष्योंके प्रयोजनके लिए, हितके लिये, सुखके लिये, विचरण करो।"

"जो रोगीकी सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है" कहने वाले तथागतने स्वयं रोगीकी सेवा की। भूखोंको

Downloaded from http://dhamma.digital/

भोजन देनेकी शिक्षा देनेवाले लोकनाथने स्वयं भूखोंको भोजन दिलाया। क्षमा एवं सहन शीलता आदि गुणोंके प्रशंसक शास्ता (गुरु) ने अपने अहित चाहने वालोंके प्रति मैत्रीभाव रखा। सम्प्रदायवाद एवं संकीर्ण मनोवृत्तिकी निन्दा करने वाले भगवान्ने सदाही सभी सम्प्रदायोंके प्रति अपना भाव उदार रखा। तथागतने जो कहा, उसे किया और जो किया उसे कहा।

आचरणकी पवित्रता

दुःखसे मुक्ति पानेके लिये निश्चित मार्गमें केवल समाधि और दर्शनही पर्याप्त नहीं हैं, आचरणकी पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है। अतः तथागतने सदाचार (शील) पर विशेष रूपसे जोर दिया। उन्होंने कहा— "दुराचारी और एकाग्रता-रहितके सौ वर्षके जीनेसेभी सदाचारी (शीलवान) और ध्यानीका एक दिनका जीवन श्रेष्ठ है।" तथागत तो आचरणकी पवित्रतामें सर्वश्रेष्ठही थे। क्या किसी देव या मनुष्यने उनके आचरणमें कभी कोई कमी देखी? वे शास्ता परम पवित्र और निर्मल थे। उनके आचरणकी पवित्रताकी तुलना नहीं। उन्होंनेभी अपने आचरण की पवित्रताकी श्रेष्ठताको बतलाते हुए कहा है— "भिक्षुओ! यह शील तो बहुत छोटे और गौण हैं जिसके कारण अनाडी मेरी प्रशंसा करते हैं। भिक्षुओ! इनके अतिरिक्त और दूसरे धर्म हैं जो गम्भीर, दुर्ज्ञेय, सुन्दर तर्कसे न जाने जा सकने वाले, निपुण और

Downloaded from http://dhamma.digital/

पण्डितों के समझने योग्य हैं, जिन्हें तथागत स्वयं जानकर और साक्षात्कार कर कहते हैं और जिन्हें तथागतके यथार्थ गुणको ठीक-ठीक कहने वाले कहते हैं।"

जो शास्ता (मार्गोपदेशक) अपवित्र आचरण वाले होकर पवित्रताका उपदेश देते हैं, उसे विज्ञ लोग नहीं ग्रहण करते जो स्वयं कूएँमें गिरा है वह भला दूसरे गिरे हुएको कैसे निकालेगा ? किन्तु पवित्र आचरण वाले तथागतके आचरणकी पवित्रता सम्बन्धी उपदेशको सुनकर स्रोता कहते थे— "भन्ते ! जैसे कोई पुरुष नरकके खड्डमें गिरते किसी पुरुषको उसका केश पकडकर ऊपर खींच ले और भूमिपर रख दे, उसी तरहसे मैं आपके द्वारा नरक–खड्डमें गिरते हुए ऊपर खींचा जाकर भूमिपर रख दिया गया हूँ। आश्चर्य है! अद्भुत है ! जैसे औंधेको सीधा कर दे, ढँकेको खोल दे, मार्ग-भूलेको मार्ग बता दे, अन्धकारमें तेलका प्रदीप दिखा दे जिसमें कि आँख वाले रूपको देखें, उसी तरह भन्ते ! भगवान्ने अनेक प्रकारसे धर्मको प्रकाशित किया। भन्ते ! मैं भगवान्की शरण जाता हूँ, धर्म और भिक्षु-संघकीभी। आजसे जीवन भर भगवान् मुझे अपनी शरणमें आए हुए उपासक की भाँति स्वीकार करें।"

मध्यम-मार्गकी विशेषता

लोक और सत्वके शाश्वत (नित्य) आदि होनेकी बातको तथागतने निरर्थक बतलाया। उन्होंने इस सम्बन्धमें

Downloaded from http://dhamma.digital/

एक दृष्टान्त देते हुए कहा कि जैसे किसी व्यक्तिको विषमें बुझा हुआ वाण लगा हो, वह उससे सुखी होने के लिए उसे न निकलवाकर कहे कि मैं इसे तब तक नहीं निकलवाउँगा, जब तक कि यह न जानलूँ कि मुझे वाण किसने मारा है ? वह कैसा है ? किस कदका है ? उसके माँ–बाप कौन हैं ? तो वह इन प्रश्नोंके उत्तर पाये बिनाही मर जाएगा । इसी प्रकार लोक और सत्वके आदि अन्तके पर्यवेक्षणमेंही जीवन व्यतीतहो जायेगा और यह प्रश्न हल न हो सकेगा । इसलिये तथागतने इन दस प्रश्नोंको अव्यकृत (अकथनीय) कहा है:—

१. लोक नित्य है ?
२. लोक अनित्य है ?
३. लोक अन्तवान है ?
४. लोक अनन्त है ?
५. वही जीव है, वही शरीर है ?
६. जीव दूसरा है, शरीर दूसरा है ?
७. मरनेके बाद जीव फिर उत्पन्न होता है ?
८. मरनेके बाद जीव फिर नहीं उत्पन्न होता है ?
९. मरनेके बाद जीव होता है और नहींभी होता है?
१०. मरनेके बाद जीव नहीं होता है, नहीं न होता है!

भगवान् बुद्धने यहभी कहा है कि ये प्रश्न विराग, शान्ति, सम्बोधि (ज्ञान) एवं निर्वाणके लिए अर्थ युक्त नहीं

Downloaded from http://dhamma.digital/

हैं, धर्मयुक्त नहीं हैं, और न आदि ब्रह्मचर्यके लिए ही उपयुक्त हैं, इस लिये ये अव्याकृत हैं।

तथागतकी दृष्टि नित्य और अनित्य दृष्टियोंसे भिन्न है। उनके अनात्मवाद में नित्य आदिवादोंको स्थान नहीं है। उनका निर्वाणगामी मार्ग शरीर–मण्डल और शरीर–दण्डन इन दोनों धारणाओंसे रहित है। इस प्रकार उन्होंने सांसारिक भोग विलासमें रहकर मौज उडाने और नाना प्रकारसे शरीर-को पीडित करनेके दोनों अन्तों (चरम सिमाओं) को त्यागकर मध्यम मार्गका उपदेश दिया, जिसे आर्य अष्टाङ्गिक मार्गभी कहते हैं, जो विशुद्धिका सर्वोत्तम और अद्वितीय मार्ग है। इसके आठ अंग हैं– (१) सम्यक् दृष्टि (२) सम्यक् संकल्प (३) सम्यक् वचन (४) सम्यक् कर्मान्त (५) सम्यक् आजीविका (६) सम्यक् व्यायाम (७) सम्यक् स्मृति और (८) सम्यक् समाधि। इस मध्यम मार्गमें किसी पोथी-पत्रेकी गुलामी स्वीकार नहींकी गई है और न तो किसी अन्य व्यक्ति विशेषकी ही। धर्म ग्रहणमें व्यक्तिका बुद्धि स्वातन्त्र्य अपेक्षित है। द्वेषसे दूषित दयासे रहित, ईर्ष्याके वशीभूत और चंचल-तासे युक्त होकर ब्रह्माकी पूजा करनेसे मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षाकी भावनाका ब्रह्मत्व पाना श्रेष्ठ है। तथागतने साफ–साफ बतलाया है कि कोई दूसरा व्यक्ति किसी दूसरेकी शुद्धि नहीं कर सकता। शुद्धि या अशुद्धि अपने हाथकी बात है। व्यक्ति अपना स्वामीं आप है, उसेही गुण–धर्मोंका पालन

Downloaded from http://dhamma.digital/

कर ब्रह्मत्व (निर्वाण) प्राप्त करना है। तथागत भिक्षुओंको कहा करते थे— "भिक्षुओं! आत्मद्वीप और आत्मशरण (स्वावलम्बी) होकर विहार करो, किसी दूसरेके भरोसे मत रहो।"

मध्यम मार्गमें न कोई ऊँच है, न नीच। सब व्यक्ति समान हैं। भगवान्ने जन्मना ऊँच–नीचकी भावनाओं की निन्दा करते हुए सद्गुणोंकी प्रधानतापर अधिक जोर दिया। उन्होंने नीच समझेजाने वाले पीड़ित वर्गको इस विषम वातावरण से निकाल कर उन्नति पथपर किया। मनुष्यत्वकी श्रेष्ठताको दिखलाते हुए भेद–भिन्न जन–समूहको एक सूत्रमें बाँधा। उन्होंने मध्य मार्गमें किसी प्रकारका रहस्य नहीं रखा। जिस प्रकार सूर्य और चन्द्र सर्वसाधारणके लिए एक समान प्रकाश प्रदान करते हैं, उसी प्रकार तथागतने उसे खोलकर सब के सामने रख दिया, जिसे देखकर लोगोंका हृदय श्रद्धासे भर गया और जिसे सुनकर विज्ञ पुरुषोंने कहा— "भला, भगवान्के धर्मको सुनकर कौन अत्यन्त संतुष्ट नहीं होगा! भन्ते! मैं आपके धर्मको सुनकर अत्यन्त सन्तुष्ट हूँ। भन्ते! आपने खूब कहा है, आपने खूब कहा है!"

जब तथागत मध्यममार्गका उपदेश देते हुए बतलाते थे कि यह रूप है, यह रूपकी उत्पत्ति है, रूपका विनाश है, तब जो देवता ऊँचे विमानोंमें रहने वाले हैं वे भी तथागतके धर्मोपदेशको सुनकर डरते और भय खाते थे, उन्हें संसारसे

Downloaded from http://dhamma.digital/

निर्वेद हो आता था, तो आदमीकी क्या बात ? यह कारण था कि श्रद्धावान् कुलपुत्र मुक्तिदायक धर्मको सुनकर घरबार छोड प्रव्रजित हो जाते थे, जिसके लिये भगवान्को कभी-कभी बुरा भलाभी कहा जाता था–

एक समय मगधके प्रसिद्ध प्रसिद्ध–कुलपुत्र भगवान्के शिष्य हो रहे थे। लोग यह देखकर हैरान होते, निन्दा करते और दुःखी होते थे— "अपुत्र बनानेको श्रमण गौतम उतरा है, विधवा बनानेको श्रमण गौतम उतरा है, कुल-नाशके लिए श्रमण गौतम उतरा है। अभी उसने एक हजार जटिलोंको साधु बनाया। संजयके इन ढाई सौ परिव्राजकोंको भी साधु बनाया। अब मगधके प्रशिद्ध प्रसिद्ध कुलपुत्रभी श्रमण गौतमके पास साधु बन रहे हैं !"

जब इस बातको भिक्षुओंने भगवान्से कहा तब उन्होंने कहा— "भिक्षुओ ! ताना मारने वालोंको तुमभी इस प्रकार उत्तर दो— महावीर तथागत सच्चे धर्मके रास्ते ले जाते हैं, धर्मसे ले जाये जाने वालोंके लिये बुद्धिमानोंको ईर्ष्या क्या ?"

भिक्षुभी तथागतके तपदेशको सुन बोल उठते "आश्चर्य भन्ते ! अद्भुत भन्ते ! इस धर्मोपदेशको सुनकर रोमांच हो गया !" जिस प्रकार स्वच्छ, मधुर, शीतल जलवाली, रमणीय, सुन्दर घाटों वाली पुष्करणी हो, उसमें सभी दिशाओंसे सभी जातियोंके लोग आकर स्नान करें, अपनी प्यास बुझायें, इसी प्रकार तथागत द्वारा उपदिष्ट मध्यम–

Downloaded from http://dhamma.digital/

मार्गको प्राप्त कर सभी व्यक्ति आध्यात्मिक शान्तिको प्राप्त करते हैं। जैसे लड्डू को जिधर से खायें, मीठा ही होता है, वैसे ही तथागतके मध्यम–मार्गको जिधरसे प्रजा द्वारा देखा जाता है, सन्तोष एवं प्रसन्नता ही प्राप्त होती है।

भाषाकी स्वतन्त्रता

किसीभी धर्मोपदेशकके लिये यह आवश्यक है कि वह जनसाधारणकी भाषाको अपनाये। तथागतने धर्मोपदेशके लिए जन–भाषा मागधी (पालि) को अपनाया। उन्होंने भिक्षुओंको भी किसी एक भाषाका आग्रहण छोडकर अपनी–अपनी मातृ-भाषामें ही धर्म-सीखने एवं कहनेकी अनुमति दी– "भिक्षुओं ! अनुमति देता हूँ अपनी भाषामें बुद्ध–वचनके सीखने की।" प्रान्तीय भाषाओंमें प्रचलित शब्दों एवं नामोंके प्रतिभी विशेष आग्रह न कर सतयोचित तथा स्थानके अनुरूप प्रयोग करनेके लिएभी उन्होंने आदेश दिया "भिक्षुओं ! एक ही वस्तु किन्हीं–किन्हीं जनपदोंमें 'पाली' भी पुकारी जाती है, पत्त, वित्त शराब, धारोप, पोण और पिसीलवभी। इस प्रकार जैसे जैसे उन जनपदोंमें पुकारते हैं, वैसे-वैसे दृढतासे ग्रहणकर आग्रह व्यवहार हीं करना चाहिए, प्रत्युत जहाँ-जहाँ जिन-जिन शब्दोंका प्रचलनहो, उन्हीं–उन्हींका प्रयोग करना चाहिए।" इस प्रकार भगवान् एवं भिक्षुओंने जहाँपरभी जोकुछ उपदेश दिया, उसे जनसाधारणने भली प्रकार समझा और ग्रहण किया।

Downloaded from http://dhamma.digital/

धर्म प्रचारकी सहिष्णुता

तथागतकी धर्म-विजय अपूर्व एवं अनन्त थी। उन्होंने अपने अनन्त गुणोंके प्रतापसे ही ऐसी अद्‌भुत धर्म-विजय की। तथागत के श्रावकभी अपने सद्‌गुणोंके प्रकाशसे मानव मात्रको प्रकाशित करते हुए सर्वत्र विचरण किया। उन्होंने नाना प्रकारसे कष्ट सहे, किन्तु अपने उद्देश्यसे न डिगे। उनमें धर्म-प्रचारकी पूर्ण रूपसे सहिष्णुता थी। इस बातको हम, आयुष्मान् पूर्ण और तथागतके वार्तालापसे भली प्रकार जान सकते हैं। शास्ताने आयुष्मान पूर्णसे पूछा—

"पूर्ण ! तू किस जनपदमें विहार करेगा ?"

"भन्ते ! सूनापरान्त नामक जनपद है, मैं वहाँ विहार करूँगा।"

"पूर्ण ! सूनापरान्तके मनुष्य चण्ड हैं, कठोर हैं, यदि वे तुझे डाँटे या गाली दें, तो तुझे क्या होगा ?"

"यदि भन्ते ! सूनापरान्तके मनुष्य मुझे डाँटे या गाली दें, तो मुझे ऐसा होगा— सूनापरान्तके गनुष्य भद्र हैं जो कि मुझपर हाथसे प्रहार नहीं करते'। भगवान् मुझे ऐसा होगा, सुगत !! मुझे ऐसा होगा।"

"पूर्ण ! यदि वे तुझपर हाथसे प्रहार करें ?"

"तो भन्ते ! मुझे ऐसा होगा—सूनापरान्तके मनुष्य भद्र हैं, जो मुझे डण्डेसे नहीं मारते।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

"पूर्ण ! यदि वे डण्डे या शस्त्रसे मारें ?"

"तो भन्ते ! मुझे ऐसा होगा-- वे मेरे प्राण नहीं लेते ।"

"पूर्ण ! यदि सूनापरान्तके मनुष्य तुझे तेज हथियार से मार डालें ?"

"तो भन्ते ! मुझे ऐसा होगा-- उन भगवान्‌के कोई कोई शिष्य हैं जो जीवनसे तंग आकर आत्म-हत्या करनेके लिए हथियार खोजते हैं, सो मुझे बिना खोजेही हथियार मिल गया ।"

"साधु ! साधु !! पूर्ण, साधु !!! तू इस प्रकारसे शम, दमसे युक्तहो सूनापरान्त जनपदमें बास कर सकता है ।"

तथागतकी अनुपम धर्म-विजय एवं उनके अनन्त गुणोंकी तुलना नहीं की जा सकती । आयुष्मान सारिपुत्रके शब्दों में सम्बोधि (परमज्ञान) में भगवान्‌से बढकर कोई दूसरा श्रमण या ब्राह्मण न हुआ, न होगा, न इस समय है ।" उन अनन्त ज्ञानी सम्यक् सम्बुद्धका जिन्होंने दर्शन किया, जिन्हें उनकी धर्म-विजय द्वारा विजित होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ, उन कृतपुण्य व्यक्तियोंका जीवन धन्य था ! वे सफल मानव-सन्तान थे ! हमारे लिये तो आज केवल उनकी पुण्य स्मृतियाँ एवं बचनामृत ही अवशेष हैं । उन महान् धर्म-विजयी तथागतको बार-बार प्रणाम् ।

★★

Downloaded from http://dhamma.digital/

६

तथागतका धर्मराज्य

भगवान् बुद्धमें दस बल थे, उन्हीं दस बलोंके कारण वे 'दशबल कहलाते थे और उन्हीं दशबलोंसे वे 'ब्रह्मचक्र' का प्रवर्तनभी करते थे, जो चक्र अन्य किसीभी श्रमण, ब्राह्मण, देव, मार ब्रह्मा या लोकके किसीभी व्यक्ति द्वारा प्रवर्तित नहीं हो सकता था। वह ब्रह्मचक्र किसीभी प्रकारसे पलटने वाला नहीं था। उस ब्रह्मचक्रके प्रभावमें मनुष्य, देवता, मार और ब्रह्मा सभी थे। तथागत उस धर्मराज्यके अनुपम धर्मराजा थे। 'ब्रह्म-चक्र' 'धर्मचक्र' का ही पर्यायवाची शब्द है जो बुद्ध-शासनका अपना पारिभाषिक शब्द है।

धर्मराज तथागतने ऐसे अनुपम धर्मचक्रको प्रवर्तित करनेके पूर्व एक धर्मनगरकी स्थापना की थी। उस धर्मनगरके प्राकार 'शील' (सदाचार) के बने थे। उसके चारों ओर ही (लज्जा) की खाई खुदी थी। ज्ञान उसके फाटक पर चौकसी करता था। उस धर्मनगरमें उद्योगकी अटारियां बनी थीं। श्रद्धाकी नींव बनी थी और स्मृति द्वारपालका काम करती थी। प्रज्ञाके बडे बडे भवन बने थे। उसमें धर्मोपदेशके सूत्रोंके

Downloaded from http://dhamma.digital/

सुन्दर-सुन्दर उद्यान लगे थे। उस धर्मनगरमें धर्मकीही चौक बसी थी। विनय की कचहरी लगी थी। उसकी सडकें स्मृति प्रस्थानकी थीं, जिनके किनारे-किनारे नाना प्रकारकी सुगन्धियोंकी दूकानें सजी थीं। वे सुगन्धियाँ दिव्य और अनुपम थीं। साधारण और लौकिक सुगन्धियाँ केवल सीधी हवाकी ओर ही वहा करती हैं, किन्तु वे उल्टी, सुल्टी नीचे ऊपर सर्वत्र अपनी गमगमाहटसे सबको अपनी ओर आकर्षित किया करती थीं। लोग उन्हें सूंघकर फिर राग, द्वेष, मोहकी ओर नहीं लौटते थे। जो उस धर्मनगरमें प्रवेश कर जाते थे, वे उस नगरके अमूल्य रत्नोंको अपनाकर वहींके नागरिक बन जाते थे, उन्हें कामवासनामय जगतसे उदासीनता हो आती थी। वे नैष्क्रम्यके पुजारीहो परम शान्तिकी और अग्रसर होने लगते और अल्पकालमेंही उन्हें ऐसा ज्ञान हो आता था– "जन्मक्षीण हो गया, ब्रह्मचर्यवास पूरा हो गया, जो कुछ करना था, सो कर लिया और कुछ यहाँ करनेके लिए शेष नहीं रहा।" वे तथागतके पास जाते और प्रसन्नता पूर्वक अपने उदानों (प्रीति वाक्यों) को सुनाते थे–– "किलेसा झापिता मय्हं, कंत बुद्धस्य सासनं" मेरे सारे क्लेश, (राग, द्वेष, मोह) जला डाले गए, मैंने बुद्ध–शासनको पूर्ण कर लिया।

तथागतने अपने धर्मराजकी स्थापना सर्वप्रथम आषाढ पूर्णिमाको ऋषिपतन मृगदाय (सारनाथ) में की थी और धर्मचक्रको प्रवर्तित कर वहीं अपने धर्मनगरका उद्घाटनभी

Downloaded from http://dhamma.digital/

किया। जिस प्रकार साधारण और लौकिक शासक श्वेत-छत्र, राजमुकुट, जूते, चवँर, तलवार, बहुमूल्य पलङ्ग इत्यादि राज्य–भाण्डोंका उपयोग करते हैं, उसी प्रकार उन अनुपम धर्मराज ने चार स्मृति प्रस्थान, चार सम्यक् प्रधान, चार ऋद्धिपाद, पाँच इन्द्रियाँ, पाँच बल, सात बोध्यङ्ग और आर्य अष्टांगिक मार्गको अपने काममें लाया।

धर्मराज तथागतने अपने धर्मराज्यके नागरिकोंको सदा कर्मवादी, क्रियावादी, वीर्यवादी बनाया। उन्होंने अक्रियावाद को केशकम्बल जैसा घृणित कहा। अनुशासन करते हुए सदा ही उन्होंने भिक्षुओंको कहा— "भिक्षुओ ! श्रद्धालु श्रावकके लिए शास्ताके शासनमें परियोगके लिए वर्तते समय शास्ताका शासन ओजवान होता है। भिक्षुओ ! तुममें ऐसी दृढता होनी चाहिए–चाहे चमडा, नस और हड्डीही बच रहे, शरीरका रक्त–माँस सूख क्यों न जाय, किन्तु पुरुषके स्थाम एवं पराक्रमसे जो कुछ प्राप्य है, उसे विना–पाये मेरा उद्योग न रुकेगा।"

धर्मराज्यके अपराधियोंको जला डालना, खत्म कर देना, निर्वासित कर देना, दबा डालना और उन्हें दूर भगा देना ही सजायें हैं। धर्मराजके अपराधी हैं क्रोध, मान, मोह, लोभ, द्वेष, डाह मात्सर्य आदि अकुशल। इनके त्यागके लिए तथागत जामिनभी होते थे और कहते थे कि इन्हें त्यागो, मैं तुम्हारी मुक्तिके लिए जामिन होता हूँ, किन्तु परम दयालु

Downloaded from http://dhamma.digital/

तथागत इन अपराधियोंके साथ भिडनेमें, संग्राम करनेमें, उन्हें जला डालनेमें दया करनेको अवकाश नहीं देते थे। किन्तु जब ये अपराधी दूसरेको पीडित करते थे और उन्हें पराजित करके उनके सहयोग से आ जुटते थे तब तथागत सहनशीलता-का उपदेश देते थे और कहते थे— "सहलो, सह लेना परम तप है।" "भिक्षुओं! चोर लुटेरे चाहे दोनों ओर मुठिया लगे आरेसेभी अंग–अंगको चीरें तोभी यदि वह मनको दूषित करे तो वह मेरा शासनकर नहीं है। वहाँपरभी भिक्षुओं! ऐसा सीखना चाहिए– मैं अपने चित्तको मैत्रीसे प्लावित कर विहार करूँ।"

धर्मराज तथागत अपने धर्मराज्यके कर्तव्योंको बतलाते हुए कहा करते थे– "भिक्षुओ! यह ब्रह्मचर्य लाभ, सत्कार, प्रशंसा, पानेके लिए नहीं है। शील–सम्पत्तिके लाभके लिए नहीं है, न समाधि-सम्पतिके लाभके लिए है, न ज्ञान दर्शनके लाभके लिए है। भिक्षुओ! जो यह न च्युत होने वाली चित्त की मुक्ति है, इसीके लिए यह ब्रह्मचर्य है। यही सार है, यही अन्तिम निष्कर्ष है।" "भिक्षुओ! मैं बेडेकी भाँति पार जानेके लिए तुम्हें धर्मका उपदेश देता हूँ, पकड कर रखनेके लिए नहीं।" "एकत्रित होनेपर भिक्षुओं! तुम्हारे लिए दो ही कर्त्तव्य हैं। १–धार्मिक कथा या २–आर्य तूष्णी–भाव (उत्तम मौन)।"

तथागतके धर्मराज्यमें सभी लोग समान थे, किसी

Downloaded from http://dhamma.digital/

प्रकारका सामाजिक या धार्मिक भेद-भाव नहीं था। जिस प्रकार छोटी-बडी सभी नदियाँ समुद्रमें मिलकर समान जल वाली हो जाती हैं, उनका नाम, गोत्र लुप्त हो जाता है, उसी प्रकार तथागतके धर्मराज्यमें प्रवेश पातेही सब अपने नाम, गोत्र, वंश, कुलकी मर्यादाको त्यागकर एक समान हो जाते थे। धर्मराज्यके नागरिक चार विभागों में विभक्त थे—(१) भिक्षु (२) भिक्षुणी (३) उपासक और (४) उपासिका। उनकी सार्मथ्यके अनुसार तथागतका सबके लिए अनुशासन था। गृहस्थ और प्रव्रजितोंकी भी सीमा बँधी थी। प्रव्रजितोंको गृहस्थोंके प्रगाढ संसर्गसे दूर रहनेकी आज्ञा थी। तथागत सदा ध्यान रखते थे कि प्रव्रजित गृहस्थोंमें मिल-जुलकर कहीं अपने उद्देश्यको भूल न जायँ और उन्हें 'मार' अपने बशमें कर ले।

तथागत प्रव्रजितोंको अपने समान ही रहने की शिक्षा देते थे। जिन कार्यों को करनेमें उन्हें स्वयं सुखकी अनुभूति होती थी, उसे वह भिक्षुओंको करनेके लिए आज्ञा देते थे। तथागतने जब एकाहार करनेका व्रत लिया और देखा कि उसीमें सुख है तो भिक्षुओंको भी कहा—भिक्षुओ! मैं एक आसन-भोजनका सेवन करता हूँ। एक आसन-भोजनका सेवन करनेसे मैं अपनी निरोगिता, स्फूर्ति, बल और सुखका अनुभव करता हूँ। आओ, भिक्षुओ! तुमभी एक आसन-भोजनका सेवन करो। एक आसन-भोजनका सेवन करनेसे

Downloaded from http://dhamma.digital/

तुमभी निरोगिता, स्फूर्ति, बल और सुखका अनुभव करोगे। तथागतके राज्यमें कभी भी किसी प्रकारके बलका प्रयोग नहीं किया जाता था और न तो तथागत अपनी बातोंको विना सोचे समझे ग्रहण करलेनेको ही कहते थे उनका आदेश था कि "मेरी किसीभी बातको ग्रहण करनेसे पूर्व उसे बुद्धिकी कसौटी पर खूब कस लो। यदि वह तुम्हें जँचे तो ग्रहण करो और यदि न जँचे तो त्याग दो।" धर्मराज्यमें बुद्धिकी पूरी स्वतंत्रता थी। सब लोग अपनी-अपनी बुद्धिके अनुसार विचार विमर्ष करनेके लिये स्वतंत्र थे। तथागतने उन्हें 'महाप्रदेशकी अनुपम कसौटी सौंप दी थी, जिससे वे अपनी बुद्धि स्वातंत्र्यका प्रयोग भली प्रकार कर सकते थे।

तथागतके धर्मराज्यके सेनापति आयुष्मान सारिपुत्र थे। वे तथागत द्वारा प्रवर्तित 'धर्मचक्र' को अनुप्रवर्तन करते थे। जो अनन्त ज्ञानी, सांसारिक, वस्तुओंमें नहीं फँसने वाले, अतुल्यगुण, यश, बल तेज वाले थे और जिन्होंने प्रज्ञाकी सीमा पा ली थी। ऋद्धिमान् भिक्षु धर्मराज्यके पुरोहित थे और उसके नागरिक—थे सूत्रोंको जानने वाले, अभिधर्मको जानने वाले, धर्मके उपदेशक, जातक कथाओंको कहने वाले, पाँच निकायोंको याद करने वाले, शील, समाधि और प्रज्ञा से युक्त, बोध्यङ्ग भावना में लगे रहने वाले। वह धर्मराज्य बाँस या सरकण्डेके झाडके समान उपर्हतोंसे खचाखच भरा रहता था। राग, द्वेश और मोह रहित क्षीणाश्रव (जीवन

Downloaded from http://dhamma.digital/

मुक्त), तृष्णा रहित तथा उपादानको नाश कर देने वाले उसमें रहते थे। जंगलमें रहने वाले धुताङ्गधारी, ध्यान करने वाले, रूखे चीवर वाले, विवेकमें रत, धीर लोग उसमें वास करते थे। धुताङ्गधारी ही उस राज्यके हाकिम थे। दिव्य चक्षु-प्राप्त प्रकाश जलाने वाले थे। आगमके पण्डित चौकीदार थे और वियुक्ति-प्राप्त थे माली। फूल बेचने वाले आर्यसत्योंके रहस्यको जानने वाले थे तथा शीलवान थे गन्धी।

ऐसे अनुपम धर्मराज्यके तथागत राजा थे, जो अपने विशाल एवं अद्भुत, आश्चर्यमयी राज्य सम्पत्तिपर अपनत्व नहीं रखते थे, उन्हें कभीभी ऐसा नहीं होता था कि मैं भिक्षु-संघको धारण करता हूँ और भिक्षु संघ मेरे उद्देश्यसे है। वे जो कुछभी कहते थे स्पष्ट करते थे। आचार्य-मुष्टि नहीं रखते थे। वे बहुजनके हित सुखका ध्यान रखतेहुये किसी बातको कहतेभी थे।

तथागतका धर्मराज्य भीतर-बाहर सब प्रकारसे परिशुद्ध, निर्मल और एक समान आकर्षक था। वह मधु-पिण्डिक (लड्डू) के समान चारों ओरसे सुन्दर और माधुर्य-पूर्ण था। तथागतने अपने श्रावकोंको धर्मराज्यमें भली प्रकार विचरण करनेके लिये करुणा प्रेम, दया और अनुकम्पासे प्रेरित-हृदय हो यह आदेश दिया था- "भिक्षुओ! श्रावकोंके हितैषी, अनुकम्पक शास्ताको अनुकम्पा करके जो करना चाहिये, वह तुम्हारे लिये मैंने कर दिया। भिक्षुओ। यह

Downloaded from http://dhamma.digital/

वृक्षमूल हैं, यह सूने घर है, ध्यानरत होओ। भिक्षुओ! मत प्रमाद करो, मत पीछे अफसोस करने वाले बनना, यह तुम्हारे लिये हमारा अनुशासन है।"

तथागतके उस अनुपम धर्मराज्यकी स्मृतिको बार-बार प्रणाम है और प्रणाम है उसके अनु प्रवर्तक तथा सभी नागरिकों को। क्या वह तथागतका धर्मराज्य स्वप्नमेंभी देखनेको मिलेगा?

**

७

तथागतकी पूजा

भगवान् बुद्धकी पूजा सर्वोत्तम पूजा है। संसारमें तथागत की पूजा ही एक ऐसा आधार है कि जिससे जीवन सफलहो जाता है। जो भगवान् महाज्ञानी हैं, जिनमें राग द्वेष और मोहक लव लेशभी नहीं है, जो प्रभु सदा शुद्ध, अन ङ्गण और कृपा माधुरीके आवास हैं, जिन शास्तामें तृष्णा, माया, अज्ञान और अहंता का बास नहीं, जो मुनीन्द्र, लोक-गुरू एवं सर्वज्ञ हैं, उन लोकनाथकी पूजा कौन बुद्धिमान् नहीं करेगा ? इसी लिए तो सुर, असुर, ब्रह्मा, नर–नारी सभी उनकी पूजा करते थे। तथागत की पूजा कर वे अपना अहो-भाग्य मानते थे। उपासक तथा उपासिकाओं द्वारा पूजा हेतु सायं–प्रातः लायेहुए पुष्प, माला, गन्ध, धूप आदिका ढेर लग जाताथा जिससे भगवान्की कुटी सदा सुवासित रहती थी और इसी कारण उसे 'गन्ध-कुटी' कहा जाता था।

तथागतकी पूजा उनकी शारीरिक पूजा नहीं, प्रत्युत उनके गुणोंकी पूजा है। बालक सिद्धार्थकी किसी ने कभी पूजा नहीं की राजकुमार सिद्धार्थको किसीने कभी पुष्प, गन्ध,

Downloaded from http://dhamma.digital/

धूप, दीप नहीं चढाये और महातपस्वी सिद्धार्थकी किसीने कभी अर्चना न की, किन्तु सम्यक् सम्बुद्धके लिए देवताओंने दुन्दुभी बजायी, आकाशसे सुमन–वृष्टिकी और चारों ओरसे आकर हाथ जोड स्तुति तथा प्रणाम् किया। महाब्रह्मानेभी उनकी सेवा में आकर अपनी भक्ति प्रगटकी और दाहिने घुटनेको पृथ्वी पर टेककर हाथ जोड प्रणाम करके कहा– "भन्ते ! धर्म का उपदेश करें, सुगत ! धर्मका उपदेश करें।" भगवान् बुद्धके दर्शन एवं सत्संगके पश्चात् इन्द्रने तो ब्रह्माकी पूजा बिल्कुल ही छोड दी थी और भगवान्से प्रार्थना करते हुए कहा था— "जब मैंने संदेहोंको दूर करने वाले भगवान् बुद्धको देखा, तो उनकी उपासना करके भय रहित हो गया। मैं तृष्णा रूपी शूलको नष्ट करने वाले, असाधारण, सूर्यवंशमें उत्पन्न, महावीर बुद्धको नमस्कार करता हूँ। मैं अपने देवोंके साथ जो ब्रह्माको नमस्कार किया करता था, वह नमस्कार आजसे आपहीको करूँगा।"

यक्ष, गन्धर्व, कुण्भांड और नाग सदा ही तथागतकी पूजा करते थे। सुर एवं असुर सभी आरक्षा हेतु भगवान्की पूजा करते हुए ऐसा कहा करते थे— "आंगिरस श्रीमान् शाक्यपुत्रको नमस्कार है, जिन्होंने कि सब दुःखोंके नाश करने वाले धर्मका उपदेश किया। वह देव और मनुष्योंके हितैषी हैं। उन विद्या और आचरण से युक्त, महान् तथा निर्भय भगवान् गौतमको नमस्कार है।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

चारों दिशाओंके राजाभी अपने परिवार के साथ सदा बुद्ध-पूजा करते हुए कहा करते थे– "भगवान् गौतमको प्रणाम करो, भगवान् गौतमको हम प्रणाम करते हैं। विद्या और आचरणसे युक्त गौतम बुद्धको हम प्रणाम करते हैं।

भगवान्की पूजा करनेके लिए सदा रात्रिमें देवता ब्रह्मा, गन्धर्व आदि उनके पास आया करते थे और अपनी श्रद्धा प्रकट कर, भगवान्से उपदेश सुन लौटते थे।

प्रव्रजित तथा गृहस्थ सभी भगवान्की पूजा करते थे। जो लोग तथागतको अपना शत्रु समझते थे, वे भी उनकी प्रशंसा करते थे और अन्तमें पूजा करके उनके भक्त हो जाते थे।

तथागतकी यथार्थ-पूजा आध्यात्मिक–पूजा है। शील समाधि–एवं प्रज्ञासे युक्त होकर उन परम गुणवान् शास्ताकी गुणोंसे ही पूजा करनी सर्वोत्तम पूजा है। अतः सभी श्रावक गुण–धर्म द्वारा ही तथागतकी पूजा करते थे। तथागतने आदेश दिया था— "आनन्द! इस समय अकालमें ही यह जोड़े शाल खूब फूले हुए हैं। तथागतकी पूजाके लिए वे तथागतके शरीरपर फूल बिखेरते हैं। स्वर्गीय मन्दार–पुष्प आकाशसे गिरते हैं, वह भी तथागतके शरीरपर बिखरते हैं। स्वर्गीय चन्दन चूर्ण भी। तथागतकी पूजाके लिए आकाशमें स्वर्गीय बाद्य बज रहे हैं। स्वर्गीय संगीत हो रहा है। किन्तु, आनन्द! इससे तथागतका सत्कार, गौरव, मान और पूजन

Downloaded from http://dhamma.digital/

नहीं होता। आनन्द! जो भिक्षु या भिक्षुणी, उपासक या उपासिका धर्मके मार्गपर आरूढ हो विहरता है, यथार्थ मार्ग पर आरूड हो धर्मानुसार आचरण करने वाला होता है, उससे ही तथागतका सत्कार, गौरव, मान और पूजन होता है। आनन्द! तुम्हें ऐसा सीखना चाहिये।"

उन लोकनाथ महाप्रभु ने औरभी कहा था– "आनन्द! तथागतकी शरीर-पूजासे तुम निश्चिन्त रहना। आनन्द! तुम सत् अर्थकी प्राप्तिके लिए उद्योग करना। सत्य अर्थके लिए प्रयत्न करना। सत्–अर्थमें अप्रमादी, उद्योगी, आत्म-संयमी हो विहार करना। आनन्द! तथागतके प्रति अत्यन्त श्रद्धालु क्षत्रिय पण्डित भी हैं, ब्राह्मण पण्डितभी हैं, गृहपति पण्डितभी हैं, वे तथागतकी शरीर पूजा करेंगे।"

किन्तु उन अनुकम्पक, सर्वज्ञ, सर्व–जन हितैषी, तथागतने पूजाके महत्वको बतलाते हुए यह भी कहा था— "पूजनीय बुद्ध अथवा उनके श्रावकोंकी जो संसारका अतिक्रमण कर गये हैं, जो शोक भयको पार कर गये हैं– पूजाके, या उन ऐसे मुक्त और निर्भय पुरुषोंकी पूजाके, पुण्यका 'परिमाण इतना है'– यह किसी सेभी नहीं कहा जा सकता।"

वे दशबलधारी, जिन, सिद्ध, वज्रबुद्धि, सुगत, तथागत भगवान् बुद्ध ऐसा होनेपर भी धर्म सेनापति स्थविर सारिपुत्रके शब्दोंमें– "देवता और मनुष्य दोनोंसे पूजा पाकर भी न उसे स्वीकार करते हैं और न अस्वीकार। बुद्धोंकी ऐसी ही बात है।"

Downloaded from http://dhamma.digital/

संगीतिकारक अर्हत् महास्थविरों ने ऐसा लोकनाथकी पूजा करते हुए कहा है— "देवेन्द्र, नागेन्द्र, नरेन्द्र तथा श्रेष्ठ मनुष्योंसे पूजित उन तथागतको हाथ जोडकर बन्दना करो, क्योंकि सौ कल्पमें भी बुद्ध होना दुर्लभ है।"

"जिसने भगवान् बुद्धके चरणोंकी पूजाकी है, उस भक्त का दस दिनका जीवनभी स्तुत्य है और जिसने तथागतके चरण कमलों की पूजा नहीं की, उसका हजारों वर्ष तक जीना भी व्यर्थ ही है। जो उन देव तथा मनुष्योंके गुरुकी यदि दरिद्रताके कारण पूजा करनेमें असमर्थ हो और वह भक्तिसे दूसरों द्वारा की गई पूजाका ही अनुमोदन करे तो वह स्वर्गकी सुन्दरियोंका सखा होता है। जो तथागत की सुरुचिपूर्ण, अति सुन्दर चित्र-रूप पूजाको देखता है, उस उदार पुरुषकेभी चिरकालसे सञ्चित पापकर्म उस समय चित्तकी पवित्रताके कारण उसे छोड देते हैं,।

तथागतके जीवन–कालमें अथवा महापरिनिर्वाण के पश्चात् जिसने श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा की, दोनोंको समान फल मिला। मनका प्रसाद समान होनेसे फलभी समान होता है। जो बुद्धिमान आदमी बनपुष्पोंसे भी, एक बारभी तथागतके चहण कमलोंकी पूजा करता है, वह इन्द्रत्वको प्राप्त करता है। उन सम्यक् सम्बुद्धके चरण कमलोंके समीप पृथ्वीपर गिरने वाला फिर नर्क में कदापि नहीं गिरता। कुशल–कर्म करने वाला कोईभी, कहींभी, कभीभी दुर्गतिको प्राप्त नहीं होता।

Downloaded from http://dhamma.digital/

"जो भक्त भगवान् बुद्धकी शरण ग्रहण करते हैं, वे दुर्गति को प्राप्त नहीं होते, मनुष्य देह छोडने पर वे दिव्य सुखोंको प्राप्त करते हैं और उसी कुशल कर्मके प्रतापसे इस संसार में रहते समय उन्हें कहींभी बुरे स्वप्न, बुरे शकुन, बुरे सर्प, बुरे शत्रु, बुरे ग्रहण, बुरे प्राणी और बुरे रोग कष्ट नहीं देते ।

"जगतका उपकार करना ही तथागतकी यथार्थ पूजा है । उन लोकगुरुके चरणोंकी पूजा वही धर्मात्मा कर सकता है' जिसकी पराये धनमें स्पृहा नहीं हैं, जो मिथ्यावादी नहीं है, जो मदिरा नहीं पीता है, जो प्राणिहत्या नहीं करता है, जिसे मर्यादा भंग करते डर लगता हैं, जो दयावान् है तथा जिसने सारा अभिमान् त्याग दिया है ।"

ब्रह्मिन्द–देविन्द–नरिन्द–राजं,
बोधि सुबोधि करुणा गुणग्गं ।
पञ्ञापदीपज्जलितं जलन्तं
वन्दामि बुद्धं भव–पार–तिण्णं ।।

जो ब्रह्माधिपति देवाधिपति नरेन्द्राधिपति हैं और जगत् में उत्तम ज्ञान प्राप्त करने तथा करुणा-गुण में सर्वश्रेष्ठ हैं ऐसे प्रज्ञाके आलोक से आलोकित भव–सागर से पार भगवान् बुद्ध की मैं बन्दना करता हूँ ।

उन सर्वश्रेष्ठ पूजनीय तथागतको मेरी पूजा स्वीकार हों ।

★★

Downloaded from http://dhamma.digital/

Downloaded from http://dhamma.digital/

Dhamma.Digital

Downloaded from http://dhamma.digital/